।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचारपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 अगस्त 2019 | वर्ष 12 अंक 4

कुल पृष्ठ 28 | वार्षिक शुल्क : ₹ 80/- (भारतवर्ष में), ₹ 800/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 7/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

सर्व सुखों की खान-सत्संग

दोहा : **जेते सुख संसार में, से सब सत्संग माहिं। अनन्त पापी तर गये, जिनकी गिनती नाहिं।।**

अर्थात्- तमाम संसार के सुखों की प्राप्ति के लिये जितने भी कर्म-धर्म आदि साधन हैं, वे सब के सब सत्संग के अन्तर्गत बताये गये हैं. सत्संग का अर्थ समझाते हुए, गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

दोहा : **बेपरवाही कीर्ती, शान्ती अरु भगवान। कह टेऊँ संसार में, चाहत सब इन्सान।।**

अर्थात्- बेपरवाही, कीर्ती, शान्ति और भगवान इन चार पदार्थों में ही दुनिया भर के तमाम सुख समाये हुए हैं और ये चारों पदार्थ प्रत्येक मनुष्य द्वारा चाहे जाते हैं परन्तु सत्संग के सिवा इनका मिलना बहुत ही कठिन है.

कोई एक सज्जन अपने परिवार व मित्रों से विदा लेकर इन चारों पदार्थों को प्राप्त करने के लिये घर से निकल पड़ा, कुछ काल पश्चात् चारों पदार्थ प्राप्त कर लौट कर अपने घर आया, उस सज्जन के वापस आने का शुभ- समाचार पाकर मित्र और नगर के लोग उसके पास आकर पूछने लगे कि हे भाई! सुनाओ तो सही, ये चार पदार्थ आपने कैसे और कहाँ से प्राप्त किये, क्योंकि हम लोग भी इन पदार्थों को प्राप्त करना चाहते हैं. यह सुनकर वह सज्जन कहने लगा कि सर्वप्रथम मैंने बेपरवाही को खोजना आरम्भ किया और लगभग एक मास के उपरान्त उसे निष्कामता और बेख्वाहिश (वितृष्णा) के अन्दर देख लिया. तदनंतर कीर्ति को ढूँढ़ने लगा और उसे भी नम्रता और विनीतता में देख लिया. तत्पश्चात् भगवान् की खोज में चल पड़ा.

छन्द : **को कहे हरि क्षीर सागर, कोई वैकुण्ठ धाम में, को कहे हरि अवधपुर में, कोई गोकुल ग्राम में, को कहे हरि पूर्व पच्छिम, दक्षिण उत्तराखण्ड में, को कहे अध उर्ध माहीं, को कहे ब्रह्मण्ड में, को कहे हरि गंग जमना, को कहे गोदावरी, को कहे प्रयाग माहीं, को कहे बृज में हरी, को कहे हरि द्वारिका में, को कहे गिरनार में, को कहे काशी गया में, को कहे केदार में, को कहे बदरी में भगवन, को कहे कैलास में, कहत टेऊँ मैं सु देखा, हरि बसे विश्वास में।।**

(आगे का पृष्ठ 2 पर पढ़ें)

आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन-चरित्रामृत से प्रश्नोत्तरात्मक प्रसंग

जिज्ञासा सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

प्रश्न : माया से यह जीव कैसे छुटकारा प्राप्त कर सकता है?

उत्तर : श्री गुरु महाराज जी मुस्कराकर कहने लगे हे पुत्र! माया किसे कहते हैं?

छन्द : **नाम रूप है मिथ्या माया, यह थिर ना कब होती है।**
बढ़ना घटना आदत इसकी, चलती है कब सोती है।।
अद्भुत खेल खेल के जग में, हसती है कब रोती है।
कहे 'टेऊँ' यह मोहिनी माया, पारब्रह्म की ज्योती है।।

सर्वप्रथम माया का स्वरूप पहचानना चाहिये. इसके बाद उसके जीतने का उपाय सोचना चाहिये. आपकी आँखों के सामने जो कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है एवं मन जहाँ तक जा सकता है वह सब माया है. इस माया में ऐसी शक्ति है जो परमात्मा से उत्पन्न होकर पुनः परमात्मा को ही आच्छादित कर देती है. जैसे जल से ही काई व घास-फूस पैदा होते हैं, और वही जल को ढक देते हैं. इसी प्रकार से इस मोहिनी माया ने सारे जगत को मोहित करके त्रिलोकी को अपने वश में कर रखा है. यह किसी को भी सरलता से नहीं छोड़ती. जिन महापुरुषों ने इस माया से छुटकारा प्राप्त किया है, उनमें से कुछ लोगों ने भागकर, कुछ ने हाथ जोड़कर और कुछ ने लड़ाई करके माया से छुटकारा प्राप्त किया है. सर्वप्रथम वैरागी जिज्ञासुओं ने अपने घरबार का त्याग करके, व्यवहारिक पदार्थों का त्याग करके जंगल में जा बैठे हैं. वहाँ पर परिपूर्ण परमात्मा का भजन करके छुटकारा प्राप्त किया है.

2. दूसरे जिज्ञासुओं ने भगवान, देवी देवताओं व सत्गुरु की प्रार्थना करके, अपने को कमजोर मानकर दास भाव से भजन करके छुटकारा प्राप्त किया है.

3. तीसरे जिज्ञासुओं ने पंच ज्ञानेन्द्रियाँ (आँख, कान, नाक, जिह्वा व चमड़ी) व पंच कर्मेन्द्रियाँ (हाथ, पैर, मुख, गुदा, लिंग) व ग्यारहवाँ मन को शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध इन पाँच विषयों से रोककर अर्थात् लड़ाई करके मन को वश में करके नियमित व्यवहार करके भजन किया है और अपने को माया से अलग किया है.

पृष्ठ 1 (आवरण) से जारी- **सर्व सुखों की खान सत्संग**

अर्थात्- भगवान के विषय में मैंने जिस किसी से भी पूछा, तो किसी ने क्षीर सागर में तो किसी ने वैकुण्ठ धाम, किसी ने अयोध्या, तो किसी ने गोकुल गाम आदि में बताया. 'पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना' के अनुसार मतलब तो सबने अपने- अपने मतानुसार वेद-शास्त्रों के प्रमाण दे-देकर अपने-अपने विचारों को व्यक्त किया. इस तरह पूछते-पूछते आखिर में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि भगवान तो विश्वास में ही है. फिर विश्वास में भगवान का दर्शन कर शान्ति को ढूँढ़ने के लिए चल पड़ा. वैसे तो मैंने खोजनें में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी थी, यहाँ तक कि नगरों के साथ-साथ पहाड़ों-जंगलों का भी कोना-कोना छान मारा, आकाश-पाताल एक कर दिया था परन्तु इतने प्रयास करने पर भी शान्ति का कहीं भी दर्शन नहीं हो पाया. फिर भी हताश न होकर शान्ति की खोज में लगा रहा. कई दिनों के बाद एक नगर में पहुँचा, शांति की खोज में तो मैं था ही, उस नगर को अच्छी तरह से देखता चला जा रहा था तो एक स्थान पर सत्संग होने के शब्द सुनाई पड़े, सत्संग सुनने की इच्छा और शान्ति पाने की इच्छा से ज्यों ही मैंने सत्संग-भवन में प्रवेश किया त्यों ही वहाँ पर शान्ति को देखा, और शान्ति के साथ-साथ बेपरवाही, कीर्ति और भगवान को भी वहाँ बैठा पाया.

दोहा : **बेपरवाही कीर्ती, हरि दर्शन पुनि शान्ति। चारों सत्संग से मिले, कह टेऊँ तज भ्रान्ति।।**

(पवित्र पुस्तक सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत के प्रथम व द्वितीय संयुक्त भाग के पृष्ठ 257-258-259 से)

ॐ सत्नाम साक्षी
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अगस्त 2019

वर्ष 12 अंक 4

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक

सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्रोत

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 80	₹ 800
दो वर्ष के लिये	₹ 160	₹ 1600

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर–474001 18 (मध्यप्रदेश)
फोन 0751-4045144
सम्पर्क समय प्रात 8 से 10 व सायं 4 से 7 बजे तक
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन पर सूचना दे सकते हैं

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरू धाम श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार–शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

समय को मुट्ठी में कर लो

कवित्त

आज ढल रहा बीते कल में समय–चक्र कोई रोक न पाया
समय फिसलता रहा रेत सा जो पल बीता फिर ना आया
जीवन में कितना पाना था पर थोड़ा पाया ज़्यादा खोया
उतना ही तो काट सकेंगे श्रम करके जितना था बोया
किंतु अभी जीवन की बही में कोरे पृष्ठ बचें हैं शेष
जितने भी पल शेष बचे हैं उनमें कर लो कार्य विशेष
मत सोचो अवसादग्रस्त हो जीवन केवल ढोना है
देखो अँधियारे बादल के छोर पर स्वर्णिम कोना है
पात्र तुम्हारा रिक्त हुआ सत्कर्मों से भर सकते हो
अपनी शक्ति तोल के देखो कितना कुछ कर सकते हो
कितने दुखिया आस पास हैं उनका थोड़ा दुःख हर लो
मृदु वाणी थोड़ी सहायता से जीवन में सुख भर दो
देखोगे जब उनके बोझिल चेहरे पर छोटी मुस्कान
होगा जीवन धन्य तुम्हारा मानों पाई सुख की खान
धरती और प्रकृति ने सोचो तुमको कितना दीना है
और स्वार्थवश दोहन करके तुमने जितना छीना है
तनिक प्रयास करोगे तो वह ऋण थोड़ा चुक जाएगा
आने वाली पीढ़ी को भी कुछ सम्बल मिल जाएगा
वृक्षारोपण कर धरती को हरियाली का दो उपहार
मन होगा हर्षित छोटे सपने होंगे सारे साकार
कोई पल अब व्यर्थ न जाए तन मन में उर्जा भर लो
सार्थक होगा जन्म तुम्हारा समय को मुट्ठी में कर लो

–सुधा जौहरी, जयपुर

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
1.	सर्व सुखों की खान– सत्संग (सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी) (आवरण मुखपृष्ठ)	1
2.	जिज्ञासा (सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी) + प्रथम आवरण का शेष	2
3.	सतगुरु महाराजनि जी खूबी एवं पुण्यतिथि भजन	4
4.	प्रेममूर्ति सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज (आलेख)	5
5.	शांति प्रकाश सतगुरु, धरती पर हैं पधारे (भजन)	6
6.	सद्गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज (आलेख)	7
7.	गुरुजनों की पावन–पुण्य स्मृति में + सद्गुरु हरिदासराम पुण्यतिथि– ब्यावर उत्सव सूचना	8
8.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी एवं सद्गुरु हरिदासराम पुण्यतिथि भजन	9
9.	धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार (कवित्त)	10
10.	देखा था उन्हें गेरूए रंग में (कवित्त)	11
11.	कान्हा और कुम्हार, भगवान श्रीकृष्ण बने शिकार (रोचक आख्यान)	12
12.	सच्ची निष्ठा का फल (श्रीगणेश जयंती विशेष)	13
13.	गरुड़, सुदर्शन चक्र और श्रीकृष्ण की रानियों का गर्व भंग (प्रभु श्रीकृष्ण बने श्रीराम)	15
14.	श्रीगणेशजी की उत्पत्ति का प्रसंग और चतुर्थी तिथि का माहात्म्य	16
15.	सच्चा संत	17
16.	पाँच महातीर्थ	18
17.	गया–श्राद्ध से प्रेतत्व मुक्ति (श्राद्ध–पक्ष विशेष)	20
18.	राम–नाम महिमा + राम राज्य	21
19.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली का देशाटन (यात्रा–दर्शन)	22
20.	सद्गुरु सर्वानन्द जल–समाधि दिवस (समाचार)	22
21.	जनोपयोगी कार्य (समाचार) + स्मरण प्रतियोगिता के शेष परिणाम	23
22.	गुरुपूर्णिमा + सिंधवासियों को हुआ महाआनन्द (समाचार)	24
23.	शोक–समाचार, वर्ग पहेली–183, 182 के सही हल, सही उत्तर भेजने वालों के नाम	25
24.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली का यात्रा–कार्यक्रम	26
25.	इस वर्ष हरिद्वार मेला नहीं होगा (सूचना)	26
26.	व्रत–पर्व–उत्सव, इस वर्ष हरिद्वार मेला नहीं होगा (सूचना)	27
27.	ब्रह्म दर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	28

सत्गुरु टेऊँराम जन ऐं सत्गुरु सर्वानन्द जन जी खूबी

(सत्गुरु शान्तिप्रकाश महाराजनि जे मुखारविंद मां)

प्रेमियों असांजा, सत्गुरु टेऊँराम जन ऐं सत्गुरु सर्वानन्द जन केड़ा न पहुंच वारा महापुरुष हा. पर डिसो- सादी पोशाक, ग़ाल्हाइण बि सरल, पंहिंजी वड़ाई न करण, पाण खे ज़ाहिर न करण माना मां हींअ हां, मां हींअ हां, असुल न. ब्या खणी कीऐं बि कन पर जहिंजो नालो वड़ाई आ- उहो असांजे टेऊँराम महाराजन या असांजे सत्गुरु सर्वानन्द महाराजन जे मुंह मंझां कड़हिं बि कहिं अखर न बुधो.

इहाई उन महात्माऊन जी खूबी हुई ऐं असल में महात्मा जी खूबी बि इहा आ कि पंहिंजी वड़ाई पाण न करे, ब्यो सजो जहान करे, पर पंहिंजी वड़ाई पाण न करे. बाबा, पंहिंजी वड़ाई पाण केर कंदो आ- जेके हल्का माण्हूं हून्दा आहिन, जन वट हून्दो आ उहे न कंदा आहिन. (सत्संग मां वरतल)

संकलन : प्रेमप्रकाशी संत दिलीप, धुलिया

भजन आनन्द

सद्गुरु शान्तिप्रकाश पुण्यतिथि 17 अगस्त विशेष

तर्ज : **ऐ मुहिंजा प्यारा पिता अजु मोकिलाए थी वञां...**

थलु : **स्वामी शांतिप्रकाश व्या, प्रकाशु शांतीअ जो करे।**
यादि में गुरुदेव जे, दिलड़ी मुंहिंजी दांहूं करे।।

1. प्यार डेई जिनि गुरनि, हरदम मूंखे पंहिंजो कयो।
अजु उन्हनि जे वास्ते, अखड़ियूं रुअनि पाणी भरे।।

2. नाम जी मुरली वजाए, मस्त मोहन ज्यां कयो।
दिलि खसे जादू हणी, व्या सभखे वेगाणो करे।।

3. दीन दुखियुनि ऐं गरीबनि, ते रख्यो हथु महिर जो।
केरु गुगिदामनि मथां, अजु मेहर जो हथड़ो धरे।।

4. इस्पताल्यूं गौशालाऊं वृद्ध आश्रम खोलिया।
जिनिजो जग में हो न कोई, तिनिखे व्या पंहिंजो करे।।

5. कल 'मनोहर' कान हुयड़ी, हंस हींअं वेंदा हली।
सींगापुर जे बदले हिन, धरतीअ खां ई व्या परे।।
स्वामी शांतिप्रकाश.....

सद्गुरु हरिदासराम पुण्यतिथि 27 अगस्त विशेष

तर्ज : **दो दिल टूटे दो दिल हारे...(हीर रांझा)**

थल : **काहे जोगिया संग नेह लगाया...**
नेह लगा के चैन गँवाया।

पहले तो अपना सुंदर, मुखड़ा दिखाया कितने प्यार से
दिखला के प्यारी सूरत, बेघर बनाया घर बार से
बेघर बना के मुखड़ा छिपाया। काहे जोगिया संग....।।

मधुर बजा के मुरली, ऐसा बँधाया प्रेम पाश में
सुन के मुरलिया हमने, जीवन बिताया अभिलाष में
बीती उमर वो, पल फिर न आया। काहे जोगिया संग....।।

दास बने खुद हरि के, कहलाये हरिदास राम जी
बन के स्वरूप हरी का, पाया हरी में विश्राम जी
लेकिन वियोग में हमको रुलाया। काहे जोगिया संग....।।

होती खबर जो मुझको, निकलोगे दिल के कठोर जी
दिल ना लगाना कोई, देता ढिंढोरा चारों ओर जी
जाना था फिर क्यों पास बुलाया। काहे जोगिया संग....।।

तुम तो भये परदेसी, जाके बसाई अमरापुरी
देखी नहीं निर्मोही, हालत हमारी अच्छी या बुरी
'मनोहर' ये कैसा खेल खिलाया।
काहे जोगिया संग....।।

–स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज, श्री अमरापुर दरबार, जयपुर

अवतरण तिथि 15 अगस्त – पुण्यतिथि 17 अगस्त विशेष

प्रेममूर्ति सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज

सृष्टि विकास के लिये होता है महापुरुषों का अवतरण! एक विकास बाहरी, जो भौतिक संसाधनों द्वारा पूरा होता है और दूसरा व्यक्ति के आन्तरिक चेतना का विकास! वह भौतिक संसाधनों से नहीं अपितु आध्यात्मिक स्त्रोतों से ही संभव होता है. ऐसे आध्यात्मिक, धार्मिक स्त्रोत संत-महात्माओं द्वारा ही विकसित होते हैं. जिसके माध्यम से जिज्ञासु उस परम रस का आस्वादन करके अपने जीवन को आनन्दमय व भक्ति से परिपूर्ण कर देता है.

सन्त-महापुरुषों का जीवन स्वयं के लिये नहीं अपितु मानवता की भलाई व निःस्वार्थ सेवा के लिये होता है. संत तो स्वयं परमात्मा के ही अंश होते हैं. जो समय-समय पर इस पवित्र धरा धाम पर अवतार लेते हैं.

महापुरुष अपने सुखों को तिलांजलि देकर समस्त संसार के जीव मात्र के कल्याण में सदैव तत्पर रहते हैं. साथ ही इस धर्मप्राण भारतवर्ष में भक्ति, प्रेम व शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं.

ऐसे महापुरुषों की श्रेणी में हमारे परम पूज्य सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का स्थान वन्दनीय है. नाम ही के अनुरूप शान्ति प्रकाश! जो सदैव भक्तों के हृदय में शान्ति का प्रकाश फैलाते हैं, सबको शान्ति का पाठ पढ़ाते हैं. जिनका नाम लेने व दर्शन मात्र से संतप्त हृदय को सहज ही परम शान्ति की प्राप्ति होती है.

ऐसी ही प्रभु सत्ता की महान विभूति परम तपस्वी महावैरागी सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज! जिनके परम शिष्य थे महान कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज! जिनका जन्म श्रावण मास सन् १९०७ नारियल पूर्णिमा (श्री सत्यनारायण), रक्षा बन्धन के पवित्र दिन सिन्ध के सक्खर जिले के चक गांव में हुआ. आपके पिता का नाम श्री आसूदोमल एवं माता का नाम श्रीमती जुगलबाई था. दोनों बड़े ही संतोषी व संत सेवाभावी थे. जिसका प्रभाव 'महाराजश्री' के जीवन पर पड़ा.

मैत्री करुणा मुदिता, त्याग तपस्या रूप।
सतगुरु शान्तिप्रकाश जी, संत शिरोमणि अनूप।।

महाराजश्री का मन बाल्यावस्था में ही संसार से उपराम होकर परमात्म चिन्तन में स्थित हो गया. वे सदैव प्रभु भक्ति में तल्लीन रहते थे. समय के साथ महाराजश्री की प्रारम्भिक शिक्षा पाठशाला से शुरू हुई. किन्तु अचानक चेचक नामक बीमारी से उनके बाह्य चक्षुओं की ज्योति जाती रही. अनेक उपाय करने पर भी पुनः ज्योति वापस न आ सकी. तब माता-पिता उन्हें सिन्ध के प्रसिद्ध थल्हे वाले संत श्री सांईं हरचूराम साहिब की शरण में ले आए. संतश्री ने कहा- चिन्ता की कोई बात नहीं! यह बड़ा महान संत बनेगा. संतश्री की वाणी सार्थक हुई.

समय पाकर महाराजश्री को भगवद् स्वरूप अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज का दर्शन हुआ. कुछ समय तक आचार्यश्री का पावन सानिध्य, दर्शन व सत्संग, सेवा व सुमरण का लाभ प्राप्त हुआ. **'महाराजश्री की निष्ठा, सेवा, स्मरण, एकाग्रता को देखकर पूज्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने मंत्रदीक्षा देकर उन्हें अपना शिष्य स्वीकार किया.'**

आचार्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वामीजी श्री अमरापुर दरबार (डिब्) पर पूर्ण श्रद्धाभाव, उत्साह, निष्ठा के साथ सेवा स्मरण में सदैव संलग्न रहते थे.

कुछ समय पश्चात् आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से आज्ञा लेकर संस्कृत भाषा, गुरु-वाणी, रामायण इत्यादि सत्शास्त्रों के अध्ययन हेतु अमृतसर, हरिद्वार, काशी आदि स्थानों पर जाकर शिक्षा ग्रहण की.

आध्यात्मिक चिन्तन-मनन के पश्चात् गुरु का संदेश जन-जन तक पहुँचाया. पूरे विश्व में भ्रमण कर

अपने ज्ञान द्वारा हजारों भक्तों को शान्ति व प्रेम का पाठ पढ़ाया. आचार्यश्री की आज्ञानुसार निष्काम सेवा कार्य में भी तत्पर रहकर मानव सेवा, समाज सेवा, मूक प्राणी अर्थात् जीवमात्र की सेवा करके अपने गुरु के यश कीर्ति को उज्ज्वल बनाया. आपने मृदुता, शीलता, शान्त सरल स्वभाव से सबको अपना बना लिया. कहते हैं ऐसे महापुरुषों के अवतार लेने से विश्व वसुन्धरा भी कृतार्थ हो जाती है.

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के परम शिष्य गो-पालक, श्रीकृष्ण स्वरूप, परोपकारी, कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के प्रादुर्भाव पर समस्त विश्व की धरा वन्दनीय बन जाती है. जिनके दर्शन मात्र से हृदय में प्रेम, भक्ति, ज्ञान की अलख स्वयं जाग्रत हो जाती है.

आप गुरु में पूर्ण आस्था व विश्वास रखते थे. गुरु को भगवान व इष्ट मानते थे. आप सदैव अपनी वाणी में कहते थे कि सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज साक्षात् रूप में आज भी हर समय हमारे साथ हैं. वे हमारी रक्षा करते हैं. प्रेरणा पुंज बनकर हमारे घट-घट में निवास करते हैं. उनके आशीर्वाद ने ही इस **'सूर श्याम दास'** को इस लायक बनाया.

किसी काम के थे नहीं- छूता नहीं कोई छाँव।
कृपा भई गुरुदेव की- तो पूजन लागे पाँव।।

आप जब भी किसी बड़े संत-महापुरुषों से मिलते थे तो सदैव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का ही परिचय देते थे. बड़ी बड़ी सत्संग सभाओं में एक बात बड़े ही डंके की चोट पर मर्मस्पर्शी स्वर में विनयपूर्वक कहते थे मेरे जैसे सूरदास का क्या मूल्य? **'यह तो सब कृपा हमारे महायोगी आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की है, जिसने मुझे इतना लायक बनाया.'** ऐसी विनयशीलता थी आपकी सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज के प्रति! इन्हीं सद्गुणों के कारण आप ध्रुव तारे के समान सदैव वन्दनीय व पूजनीय बन गये.

समय की गति और समुद्र की लहरों को कोई रोक नहीं सकता. ऐसे में मृत्युलोक का सभी को परित्याग करना पड़ता है. आपने अपनी जीवन लीला का संवरण १४ अगस्त १९९२ को वायु मण्डल में कर श्री अमरापुर धाम ब्रह्मलोक प्रस्थान किया. आपकी ज्योति महाज्योति में समा गयी. बहु प्रतिभाओं से विभूषित आपका अलौकिक जीवन हमारे लिये सदैव प्रेरणा व प्रकाश का पुंज बना रहेगा।

-साधक, श्री अमरापुर स्थान (डिब्), जयपुर

भजन

शांति प्रकाश सतगुरु, धरती पर हैं पधारे

तर्ज : बिगड़ी मेरी बना ले, जयपुर के रहने वाले.. (कव्वाली)

थल : **देखो निराली सिंध के, चक गाँव के नज़ारे।**
शांतीप्रकाश सतगुरु, धरती पे हैं पधारे।।

1. **गद्गद् हुए पिताश्री, अवतार घर में आये**
बजने लगीं बधाईयाँ, माता जुगल के द्वारे।।

2. **पावन ये रक्षा बन्धन, पूनम की चाँदनी है।**
इक चाँद है जमीं पर, दूजा गगन में प्यारे।।

3. **गुरुदेव की छटा को घूँघट से चाँद देखे।**
छिपता है बादलों में चंदा शर्म के मारे।।

4. **चन्दा के संग तारे, यूँ झिलमिला रहे हैं।**
दीपक से सतगुरू की, कोई आरती उतारे।।

5. **आकाश से बरसती, बूँदे यूँ कह रहीं हैं।**
फूलों की कर रहे हैं, बरसात देव सारे।।

6. **घनघोर ये घटाएँ, ऐसे गरज रहीं हैं।**
गुरु के जनम पे जैसे, 'मनोहर' बजे नगारे।।

देखो निराली सिंध के, चक गाँव के नज़ारे।
शांतीप्रकाश सतगुरु, धरती पे हैं पधारे।।

-स्वामी मनोहरप्रकाश जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

पावन पुण्य तिथि 27 अगस्त पर विशेष

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

(डॉ. दयाल 'आशा' सिंधु नगर)

प्रेम प्रकाश मण्डल के चतुर्थ पीठाधीश्वर सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का जन्म १३ वैसाख, सम्वत् १९८७ (सन् १९३० ई.) सिंध प्रदेश के सांघड़ जिले के घुंडण गाँव में पिता श्री हीरानन्द के घर में हुआ. उनकी माता का नाम मोतिलबाई था. उनके जन्म का नाम श्री लालचंद था. सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज सांसारिक रिश्ते में उनके मामाजी थे. स्कूल की पढ़ाई के साथ उन्होंने धार्मिक विद्या भी प्राप्त की. सन् १९५२ ई. में उन्होंने अमरापुर स्थान, जयपुर में सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से गुरु मंत्र लिया. वे सदैव उनके श्रीचरणों में रहकर संतों की सेवा भी करते रहे और धार्मिक शास्त्रों का अध्ययन भी करते रहे. सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने उनका नाम संत हरिदासराम रखा.

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज संत हरिदासराम को देश-विदेश के विभिन्न नगरों में नाम-प्रचार के लिए ले जाते थे. पहले संत हरिदासराम भजन गाते थे, तत्पश्चात् सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज सत्संग करते थे. संत हरिदासराम सत्गुरु महाराज के साथ हारमोनियम भी बजाते थे.

सन् १९९२ ई. में प्रेम प्रकाश मंडल के तृतीय अध्यक्ष सत्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ब्रह्मलीन हुए, तब मंडल के संतों ने संत हरिदासराम महाराज को धर्मपीठ का उत्तराधिकारी बनाया. उन्होंने देश-विदेश के विभिन्न नगरों में भ्रमण कर नाम का प्रचार करते प्रेमियों की आत्मिक प्यास पूरी की. २६ अगस्त सन् २००० एकादशी के पावन दिन प्रभात को वे स्पेन में ब्रह्मलीन हुए. उनका पार्थिव शरीर अमरापुर स्थान जयपुर में लाया गया. सैकड़ों संतों व लाखों प्रेमियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धाँजलि अर्पित की. मंडल के संतों ने संत भगतप्रकाश जी महाराज को सत्गुरु महाराज की गादी पर विराजमान किया.

परम्परा से प्रभावित सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने भी सिंधी एवं हिन्दी में काव्य रचना की. हिन्दी में उन्होंने थोड़े ही पद लिखे हैं.

गुरु महिमा : सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के मन में आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एवं सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के प्रति अगाध श्रद्धा थी. वे एक पद में आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरित्र का चित्र प्रस्तुत करते हुए उनकी महिमा गाते कहते हैं-

जय जय जय टेऊँराम स्वामी, कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी।

1. बुरे भले गर हैं तो तुम्हारे, जीते हैं हम तेरे सहारे।
   हम हैं तुम्हारे तुम हो हमारे, बार बार लख बार नमामी।।
2. चेलाराम के तुम हो नन्दन, माँ कृष्णा के नित सुख वर्द्धन।
   भव भय भंजन जन मन रंजन, बार बार लख बार नमामी।।
3. खण्डू नगर के नटवर नागर, अमरापुर के नित सुख सागर।
   प्रेम प्रकाशी पंथ दिवाकर, बार बार लख बार नमामी।।
4. तुम ही सत् हो तुम ही चित हो, तुम ही आनन्द एक अनन्त हो।
   तुम ही गति हो तुम ही मति हो, बार बार लख बार नमामी।।
5. तुम ही सद्गुरु तुम पितु माता, तुम ही हरी हर तुम ही विधाता।
   हम हैं भिखारी तुम हो दाता, बार बार लख बार नमामी।।

स्वामी हरिदासराम जी सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से विनय करते अपनी मनोदशा का उल्लेख करते हैं और पाँच विकारों को दूर करने के लिए प्रार्थना करते हैं-

टेक : **सद्गुरु सर्वानन्द हमें अभय दान दीजिये।**
अभय दान दीजिये, कर्म काट लीजिये।।

1. **हे अखण्ड हे अपार, ज्ञान ध्यान के भण्डार।**
   बार-बार नमस्कार, स्वीकार कीजिये।।
2. **पतित पावन पाप हरो, सिर पै दया हाथ धरो।**
   अधम का उद्धार करो, भव से पार कीजिये।।

3. उमर सारी पाप भारी, करत करत मति है मारी।
क्षमा करो एक बारी, सुमति दान दीजिये।।
4. तुम्हें छोड़ कहाँ जाऊँ, सूझत नहीं ठौर ठाऊँ।
बार-बार पड़त पाऊँ, शरण राख लीजिये।।

सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् स्वामी हरिदासराम जी ने सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की स्तुति में आरती भी लिखी जो आज समस्त दुनिया में गाई जाती है.

सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी के महाराज के उपर्युक्त पदों व आरती से प्रतिभासित होता है कि उनके मन में सत्गुरु के प्रति कितनी न श्रद्धा व निष्ठा थी. उनके इन पदों में वर्ण मैत्री, वर्ण संगति एवं छेकानुप्रास का भी प्रयोग हुआ है.

गुरुजनों की पावन पुण्य स्मृति में

प्रेम प्रकाश पंथ की वंदनीय विभूतियाँ

प्रेम प्रकाश पंथ की ये वंदनीय विभूतियाँ
गायी जा रही हैं जिनकी, धवल यश कीर्तियाँ
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

सत्गुरु टेऊँराम साधुता का सार हैं,
श्रेष्ठ वे आचार्य हैं, महिमा अपरम्पार है,
सिंध में सत् धर्म की, कर दी क्राँतियाँ,
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

स्वामी सर्वानन्द सत्गुर त्याग की हैं मूरति,
श्रेष्ठ उनकी है तपस्या और श्रेष्ठ है गुरभक्ति
श्रेष्ठ हैं उनकी सदा वे योगवाली युक्तियाँ,
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

प्रेम के सागर **सत्गुरु शान्तिप्रकाश** हैं,
दिव्य है जीवन उन्हो का, हर दिल में जिनका वास है,
प्रेरणाप्रद पावन हैं जिनके, उपदेश व स्मृतियाँ
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

स्वामी हरिदासराम सत्गुर, ज्ञान की करी गर्जना,
श्रेष्ठ है जिनकी सदा, आचार्य के प्रति अर्चना,
समझा गए सत्संग में, सबको सार-सार सूक्तियाँ
प्रेम प्रकाश पंथ की.....

+ + + + + +

गुरुजनों का पावन पुण्य स्मरण

प्रथम पूज्य आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी।
तांके पाद पंकज में शत् शत् है प्रणाम जी।।

द्वितीय सर्वानन्द गुरु सर्व-आनन्द के धाम जी।
तांका पुण्य स्मरण सदा दे अनंत आराम जी।।

तृतीय शान्तिप्रकाश गुरु दें प्रेम पैगाम जी।
जाँके स्मरण मात्र से मिलता मन विश्राम जी।।

चतुर्थ हरिदासराम गुरु निर्मोही निर्मान जी।
पावन पुण्य स्मरण जाँका करे सर्व कल्यान जी।।

संकलन : प्रेमप्रकाशी संत दिलीप, धुलिया

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 19वाँ वर्सी उत्सव
शुक्रवार 23 अगस्त से मंगलवार 27 अगस्त तक

पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में
प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर का वार्षिकोत्सव 22 से 26 सितम्बर 2019

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी विशेष

आये श्याम आये

(सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर तुम्हीं मेरी पूजा

स्थाई : दिवस है सुहाना घड़ी है सुहानी।
आये श्याम आए आये श्याम आए

1. यशोदा के घर में भयी भीड़ भारी,
सभी दे बधाई नर और नारी,
कोई दे मिठाई मक्खन कोई लाये।।

2. झूलना में झूले नंद का दुलारा,
सभी देख हर्ष उमंग है अपारा,
यशोदा के मन में खुशी ना समाए।।

3. सुन्दर श्याम मूरत बनी है निराली,
सभी देख मोहे मोहन की लाली,
देख रूप राशी चन्दा भी लजाए।।

4. सभी बृजवासी खुशियाँ मनाएँ,
ठोक ताल अपने नाचे और गाएँ,
इसी मौज मस्ती में हरी गीत गाए।।

सद्गुरु शांतिप्रकाश पुण्यतिथि विशेष

स्वामी शांतिप्रकाश महान आ

स्वामी शांतिप्रकाश महान आ
जणु धरितीअ ते भगवान आ

1. मिठड़ी जिनजी वाणी हुयड़ी,
ज्ञान भरी समझाणी हुयड़ी,
कंदा पूर्ण सभ जा काम हा

2. सभ कंहिं दिलि खे प्यारु डिनो,
आए वये खे सत्कारु डिनो,
से त गुणनि अंदर गुणवान हा

3. सतगुर टेऊँराम जनि शरणि वठी,
राम सच्चे वया रंग रची,
सदा हृदय सां निष्काम हा

4. सदा जोगिनि वारी जुगती हुई,
पूर्ण तनि हरि भक्ती हुई,
कंदा भजन सुबह ऐं शाम हा

–संत हरिओमलाल, प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर

जन्माष्टमी भजन

तर्ज : दिल के अरमां .....

टेक : प्यारे प्यारे मेरे मोहन, मेरे भगवन तुम ही हो
बाँसुरी अनहद बजाते तुम ही हो....

1. निती धर्म की सब सिखाते सीख हो
माँ को त्रिलोकी दिखाते तुम ही हो
दही–माखन भी चुराते तुम ही हो....
बाँसुरी अनहद बजाते तुम ही हो....

2. ऊखल से खुद को बँधाने वाले तुम
अर्जन को मोह से छुड़ाने वाले तुम
गिरिधारी कहलाने वाले तुम ही हो....
बाँसुरी अनहद बजाते तुम ही हो....

3. गोकुल में गायें चराने वाले तुम
वृंदावन में रास रचाने वाले तुम
पूतना को मारने वाले तुम ही हो....
बाँसुरी अनहद बजाते तुम ही हो....

4. वैजयन्ती माला गले में डालकर
कौरवों का कृष्ण तुम संहार कर
पाँडवों के रखवारे इक तुम ही हो
बाँसुरी अनहद बजाते तुम ही हो....

–ओमप्रकाश मंगतराम दीपानी, कामठी

धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार
आओ मनाएँ मिल कर सारे, कान्हा का त्योहार

तेज पुँज के रूप में कान्हा, आ गए गर्भ मँझार
देवकी माँ की कोख बन गई, सृष्टि का आधार
कारागार में मथुरा की, हुआ भव्य चमकार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

देख देवकी सुन्दर झाँकी, मंजर ये सारा भाँप गई
याद कंस की कर करतूतें, अन्दर तक थी काँप गई
ये सोच के आनन्द पाया कि अब, आ गया तारणहार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

अपने मन में निश्चय कर, ममता को था रोक लिया
एक टोकरी में रख कान्हा, वसुदेव को सौंप दिया
कहे देवकी जल्दी से इसे, पहुँचा दो यमुना पार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

क्या माया हरी ने फैलाई, सब पहरेदार अचेत हुए
जेल का फाटक आप खुला तो, वसुदेव सचेत हुए
थी भादो की वो रात अष्टमी, चले मन्द-मन्द बयार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

सिर पे धारण कर कान्हा को, वसुदेव भी काँप गए
समझ गए लीला सब उसकी, मर्जी उसकी भाँप गए
लेकर नाम हरी का चल दिए, मन में निश्चय धार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

रात अन्धेरी गिरते पड़ते, यमुना के तट पहुँच गए
देखी यमुना की धारा तो, व्याकुल मन में बहुत भए
मन पक्का कर कदम बढ़ाया, यमुना के मझधार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

यमुना जी में चलते-चलते, आ गए बीचों बीच में
यमुना जल भी चढ़कर आया, मुँह ठोढ़ी के बीच में
जी घबराए, समझ ना आए, देख के जल की धार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

हाल पिता का देखा तो, कान्हा ने जलवा दिखा दिया
अपना पैर बढ़ाकर के, श्री यमुना जी के छुआ दिया
यमुना जल भी चरण चूम कर, घट गया मानी हार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

हो गंगा जी या यमुना जी, सदा अमृत है इनकी धारा
कहें ऋषि, मुनि, योगी सारे, हो पार इन्हीं से जग सारा
वो ही पैर अँगूठा चूस रहे, अब कान्हा मेरी सरकार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

पार निकलते यमुना जी से, गोकुल नगरी आ ही गई
नन्द बाबा के महल पहुँचते, पल भर की ना देर भई
सौंप दिया यशोदा को लल्ला, भूल के लाड़-दुलार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

हुआ चमत्कार मथुरा जन्मे, ये गोकुल में कैसे आए
ये कैसी माया फैलाई, इसको ना कोई समझ पाए
'वधवा' अब कान्हा खत्म करेंगे, कंस का अत्याचार
धर्म ध्वजा की रक्षा को, कान्हा ने लिया अवतार

–प्रेमप्रकाशी हरकेश वधवा, समालखा (हरियाणा)

कन्हैया की मनोरम झाँकी

नैननि निरखि हरि कौ रूप।
चित्त दै मुख चितै, माई! कमल ऐन अनूप।।
कुटिल केस सुदेस अलिगन, नैन सरद सरोज।
मकर कुंडल किरन की छबि दुरत फिरत मनोज।।
अरुन अधर, कपोल, नासा, सुभग ईषद हास।
दसन दामिनि, लजत नव ससि, भ्रकुटि मदन बिलास।।
अंग अंग अनंग जीते, रुचिर उर बनमाल।
सूर सोभा ह्वदै पूरन देत सुख गोपाल।। (श्रीसूरदासजी)

देखा था उन्हें गेरुए रंग में

वो जब आई थी अमरापुर पहली दफ़ा
देखा था उन्हें गेरुए रंग में
आँखों में गहराई असीम थी,
अधरों पर हल्की सी मुस्कान थी
पर आसन पर प्रतिष्ठित, उनमें स्थिरता इतनी थी कि-
ध्रुव को भी लजा रही थी
हाँ, वो प्रतिमा ऐसी थी- कि अश्कों में भी
मैं खुशी तलाश रही थी...
जाने का जब इल्म हुआ, मैं हिलना वहाँ से नहीं चाहती थी
समाधी स्थल पर ही जीवन बाकी का गुज़ारना चाहती थी
हाँ, वो प्रतिमा ऐसी थी, जो मन मेरे को लुभा गई थी...
सोचती हूँ मैं क्यूँ अनभिज्ञ रहते हैं लोग
जब खुद भगवान उनके बीच रहने आते हैं
सम्मान उन्हें देने की बजाय, बेदर ही किया करते हैं...
बात खण्डू शहर की है,
जहाँ जन्मे एक बालक ने
ज्ञान वास्तविकता में क्या है,
इससे परिचित सबको कराया था
ब्राह्मण हो या शुद्र, धर्म में जाति
और नस्ल से बढ़कर बताया था
सत्य को पक्ष में कर दया का स्थान सबसे ऊँचा बताया था
तभी तो ब्राह्मण घर में जन्म लेकर
मृत शरीर एक पशु का उन्होंने स्वयं किनारे लगाया था...
पर अज्ञानी मनुष्यों ने आरोप लगाकर
उन्हें नगरी से बाहर कराया था
हाँ, वो ऐसे ज्ञानी कि अज्ञानता सबकी देख
महज़ मुस्कुराहट के साथ
घर का परित्याग कर बन को अपनाया था...
तपस्या उनकी सच्ची थी
तभी फिरंगी वेश में मिलने आए
लक्ष्मी-नारायण को पहचाना था
पर क्या इतना ही काफी था
या संकेत इसमें भी कुछ और था
स्वदेशी हो या फिरंगी, पावन तो उनका मन था
वेश और भाषा से ही गर पहचानना था
तो क्यूँ परमात्मा उसका नाम था...
हाँ वो ऐसा ज्ञानी था
जो ज्ञान ही वास्तविक परख जगाने आया था...
दोस्ती क्या है, महज़ एक विश्वास है
कि बचाने खिल्लू से उन्होंने एक क्षण भी नहीं गँवाया था
तुरंत जल में उतरकर वो बाहर उसे लाया था
हाँ, तो ऐसा मनुष्य था
जो इन्सानों को इंसानियत सिखाने आया था...
इबादत क्या है, इससे वाकिफ़ कराने वो आए थे
अमानत हैं हम उसकी
ना कुछ लाए थे, ना वापिस ले जाने कुछ आए थे
ये शरीर भी तुम्हारा नहीं, सांसारिक तत्त्वों का योग है
मरने के बाद साथ उसे तक ना ले जा पाओगे
नज़राना खुदा का तो वो आत्मा है
जिसे परमात्मा से मिलाने ही इस धरा पर आए थे
हाँ, वो ऐसे शख्स थे
जो प्रेम का सही अर्थ समझाने आए थे...
घास-फूस तृण कुटी बनाकर, कंद मूल खा जान सुखाकर
वो विषयों को त्यागने आए थे
वैराग्य अपनाकर वो प्रेम और
मोह के बीच का अंतर सिखाने आए थे
मोह तो इंसानी रूह करती है
प्रेम तो वो ईश्वरीय शक्ती है,
जो तुम्हें बंधनों से रिहा करती है...
जन्म और जनाज़े में समान रहते
साथ रहते नहीं बल्कि साथ होने का भरोसा दिलाने
प्रेम की ऐसी परिभाषा सिखाने वो आए थे
वो ऐसे अंतर्यामी थे,
जो प्रेम कैसे निभाया जाए, ये सिखाने आए थे...

-रेशमा प्रेमप्रकाशी, जयपुर

रोचक आख्यान

कान्हा और कुम्हार

प्रभु श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ बहुत-सी लीला की है. श्रीकृष्ण गोपियों की मटकी फोड़ते और माखन चुराते और गोपियाँ श्रीकृष्ण का उलाहना लेकर यशोदा मैया के पास जातीं. ऐसा बहुत बार हुआ.

जब यशोदा मैया श्रीकृष्ण की शिकायतों से तंग आ गईं तो एक बार छड़ी लेकर श्रीकृष्ण की ओर दौड़ी. जब प्रभु ने अपनी मैया को क्रोध में देखा तो वह अपना बचाव करने के लिए भागने लगे.

भागते-भागते श्रीकृष्ण एक कुम्हार के पास पहुँचे. कुम्हार तो अपने मिट्टी के घड़े बनाने में व्यस्त था. लेकिन जैसे ही उसने कान्हा को देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ. कुम्हार जानता था कि बालकृष्ण साक्षात् परमेश्वरीय अवतार हैं. तब प्रभु ने कुम्हार से कहा कि कुम्हार जी, आज मेरी मैया मुझ पर बहुत क्रोधित है, मैया छड़ी लेकर मेरे पीछे आ रही है. भैया, मुझे कहीं छुपा लो.

यह सुनकर कुम्हार ने श्रीकृष्ण को एक बड़े मटके के नीचे छिपा दिया. कुछ ही क्षणों में मैया यशोदा भी वहाँ आ गईं और कुम्हार से पूछने लगी-

क्यूं रे कुम्हार! तूने मेरे कन्हैया को कहीं देखा है क्या?

कुम्हार ने कह दिया- नहीं, मैया! मैंने कन्हैया को नहीं देखा. श्रीकृष्ण यह सब बातें बड़े से घड़े के नीचे छुपकर सुन रहे थे. मैया तो वहाँ से चली गयीं.

अब प्रभु श्रीकृष्ण कुम्हार से कहते हैं- कुम्हार जी, यदि मैया चली गई हो तो मुझे इस घड़े से बाहर निकालो.

कुम्हार बोला- ऐसे नहीं प्रभु जी! पहले मुझे चौरासी लाख योनियों के बंधनसे मुक्त करने का वचन दो.

भगवान मुस्कराये और कहा- ठीक है, मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से मुक्त करने का वचन देता हूँ. अब तो मुझे बाहर निकालो.

कुम्हार कहने लगा- मुझे अकेले नहीं प्रभु जी! मेरे परिवार के सभी लोगों को भी चौरासी लाख योनियों के बंधन से मुक्त करने का वचन दोगे तभी मैं आपको इस घड़े से बाहर निकालूँगा.

प्रभु कहते हैं- चलो ठीक है, उनको भी चौरासी के बन्धन से मुक्त होने का मैं वचन देता हूँ. अब तो मुझे घड़े से बाहर निकालो.

अब कुम्हार कहता है- बस, मेरे प्रभु! एक विनती और है, उसे भी पूरा करने का वचन दे दो तो मैं आपको घड़े से बाहर निकाल दूँगा.

भगवान बोले- वह भी बता दो, क्या चाहते हो?

कुम्हार कहने लगा- हे प्रभु! जिस घड़े के नीचे आप छुपे हो, उसकी मिट्टी मेरे बैलों के ऊपर लाद के लायी गई है. अतः मेरे इन बैलों को भी चौरासी बंधन से मुक्त कर दीजियेगा.

भगवान ने कुम्हार के प्रेम पर प्रसन्न होकर उनके लिए भी चौरासी के बंधन से मुक्ति का वचन दिया

श्रीहरि बोले- अब तो तुम्हारी सब इच्छाएँ पूरी हो गईं, अब तो बाहर निकालो इस घड़े से. तब कुम्हार कहत है- अभी नहीं, भगवन्! बस, एक अंतिम इच्छा और है. उसे भी पूरा कर दीजिए और वह यह है- जो भी प्राणी हम दोनों के इस संवाद को सुनेगा, उसे भी आप चौरासी लाख योनियों के भटकन से मुक्त कर दोगे. बस, यह वचन दे दो तो मैं आपको घड़े से बाहर निकालता हूँ.

मिट्टी को आकार देने वाले कुम्हार की प्रेम भरी बातों को सुनकर जगत के रचनाकार प्रभु श्रीकृष्ण बहुत खुश हुए और उसकी इस इच्छा को भी पूरा करने का वचन दिया. फिर कुम्हार ने बालक रूप श्रीकृष्ण को घड़े से बाहर निकाल दिया और उनके श्रीचरणों में साष्टांग प्रणाम किया. प्रभुजी के चरण धोकर चरणामृत लिया एवं अपनी पूरी झोपड़ी में चरणामृत का छिड़काव किया. अंत में प्रभु जी के गले लगकर इतना रोये कि उनकी लीला में ही विलीन हो गए.

यहाँ पर जरा सोचें, जो बाल श्रीकृष्ण सात कोस लम्बे-चौड़े गोवर्धन पर्वत को अपनी अँगुली पर उठा सकते हैं, तो क्या वो एक घड़ा नहीं उठा सकते थे. लेकिन बिना

प्रेम रीझे नहीं नटवर नन्द किशोर। कोई कितने भी यज्ञ करे, अनुष्ठान करे, कितना भी दान करे, चाहे कितनी भी भक्ति करे, लेकिन जब तक मन में प्राणी मात्र के लिए प्रेम नहीं होगा, प्रभु श्रीकृष्ण नहीं मिल सकते.

भगवान श्रीकृष्ण बने शिकार

एक बार की बात है. एक संत जंगल में कुटिया बनाकर रहते थे और भगवान श्रीकृष्ण का भजन करते थे. संत को अटूट विश्वास था कि एक-ना-एक दिन मेरे भगवान श्रीकृष्ण मुझे साक्षात् दर्शन जरूर देंगे.

उसी जंगल में एक शिकारी आया. उस शिकारी ने जब इस भयानक जंगल में कुटिया देखी. कौतुहूलवश वह कुटिया में गया और वहाँ पर संत को देखकर उनको प्रणाम किया और उनसे पूछा कि आप कौन हैं और इस बियाबान जंगल में यहाँ पर क्या कर रहे हैं?

संत ने सोचा यदि मैं इससे कहूँगा कि भगवान श्रीकृष्ण के इंतजार में बैठा हूँ कि उनका दर्शन मुझे किसी प्रकार से हो जाय तो शायद ये बात इसको समझ में नहीं आएगी. संत ने दूसरा उपाय सोचा. संत ने किरात से पूछा- भैया! पहले आप बताओ कि आप कौन हैं और इस जंगल में किसलिए आये हो?

उस किरात (शिकारी) ने कहा कि मैं एक शिकारी हूँ और अपने शिकार के लिए आया हूँ.

संत ने तुरंत उसी की भाषा में कहा कि मैं भी एक शिकारी हूँ और अपने शिकार के लिए यहाँ पर आया हूँ.

शिकारी ने पूछा- अच्छा संत जी, आप ये बताइये आपका शिकार दिखता कैसे है? आपके शिकार का नाम क्या है? हो सकता है कि मैं आपकी मदद कर दूँ.

संत ने सोचा इसे कैसे बताऊँ, फिर भी संत ने शिकारी को बोला- मेरे शिकार का नाम है..... वो दिखने में बहुत ही सुंदर है, साँवला सलोना है, उसके सिर पर मोर मुकुट है, हाथों में बंसी है. ऐसा बोलकर संतजी रोने लगे.

किरात बोला- बाबा! रोते क्यों हो? मैं आपके शिकार को जब तक ना पकड़ लूँ, तब तक पानी भी नहीं पियूँगा और आपके पास भी नहीं आऊँगा.

अब वह शिकारी घने जंगल के अंदर गया और जाल बिछा कर एक पेड़ पर बैठ गया. यहाँ पर इंतजार करने लगा. भूखा-प्यासा बैठा हुआ है. एक दिन बीता, दूसरा दिन बीता और फिर तीसरा दिन. उसे नींद भी आने लगी. बांकेबिहारी को उसके भोले भाव पर दया आ गई और भगवान उसके भाव पर रीझ गए. भगवान मंद-मंद स्वर से बाँसुरी बजाते आये और उसके जाल में स्वयं फँस गए. जैसे ही किरात को फँसे हुए शिकार का अनुभव हुआ तो तुरंत नींद से उठा और उस साँवरे भगवान को देखा.

जैसा संत ने बताया था उनका रूप हूबहू वैसा ही था. वह खुश होकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा, मिल गया, मिल गया, शिकार मिल गया. शिकारी ने उस शिकार को जाल समेत कंधे पर बिठा लिया और शिकारी कहता हुआ जा रहा है- आज तीन दिन के बाद मिले हो, भूखा-प्यासा रखा. अब तुम्हें मैं छोड़ने वाला नहीं हूँ.

शिकारी तेजचाल से कुटिया की ओर बढ़ रहा था. जैसे ही संत की कुटिया के समीप पहुँचा तो शिकारी ने आवाज लगाई- बाबा, बाबा!

संत ने तुरंत दरवाजा खोला और यह क्या.... संत उस किरात के कंधे पर भगवान श्रीकृष्ण को जाल में फँसा देख रहे हैं. भगवान श्रीकृष्ण जाल में फँसे हुए मंद-मंद मुस्करा रहे हैं.

किरात ने कहा- आपका शिकार लाया हूँ, बड़ी मुश्किल से मिले हैं.

संत के होश उड़े हुए थे. संत प्रभु के चरणों में गिर पड़े और फूट-फूट कर रोने लगे. संत कहते हैं- मैंने आज तक आपको पाने के लिए अनेक प्रयास किये प्रभु लेकिन आज आप मुझे इस किरात के कारण मिले हो.

भगवान बोले- इस शिकारी का प्रेम तुमसे ज्यादा है. इसका भाव तुम्हारे भाव से श्रेष्ठ है. इसका विश्वास तुम्हारे विश्वास से भी अधिक है. आज जब तीन दिन से इसको बिना खाये-पिये मेरी प्रतीक्षा में देखा तो मुझसे रहा नहीं गया और उसके जाल में आ गया. मैं तो वैसे भी भक्तों के अधीन ही हूँ- और आपकी भक्ति भी कम नहीं है संत जैसी. आपके दर्शनों की प्रबल इच्छा से मैं इसे तीन ही दिन में प्राप्त हो गया. इस तरह से भगवान दर्शन देकर अन्तर्धान हो गए.

सच्ची निष्ठा का फल

श्री गणेश जयंती
2 सितम्बर विशेष

प्राचीन काल की बात है. सिन्धु देश की पल्ली नगरी में कल्याण नाम का एक धनी सेठ रहता था. उसकी पत्नी का नाम इन्दुमती था. विवाह होने के बहुत दिनों के पश्चात् उनके पुत्र हुआ. उसके जन्मोत्सव में उन लोगों ने अनेक दान-पुण्य किये, राग-रंग और आमोद-प्रमोद में पर्याप्त धन व्यय किया. उस पुत्र का नाम रखा गया 'बल्लाल', वह उन दोनों के नयनों का तारा था.

'कितना मनोरम वन है.' सरोवर में अपने समवयस्क बालकों के साथ स्नान करते हुए बल्लाल ने अपने कथन का समर्थन कराना चाहा. वह उन्हें नित्य अपने साथ लेकर पल्ली से थोड़ी दूर स्थित वन में आकर सैर-सपाटा किया करता था. बालकों ने उसकी हाँ-में-हाँ मिलायी.

'चलो, हम लोग भगवान् विघ्नेश्वर श्रीगणेश देवता की पूजा करें, उनकी कृपा से समस्त संकट मिट जाते हैं.' बल्लाल ने सरोवर के किनारे एक छोटे-से पत्थर को श्रीगणेश का श्रीविग्रह मानकर बालकों को पूजा करने की प्रेरणा दी. उसने श्रीगणेश-महिमा के सम्बन्ध में अनेक बातें घर पर सुनी थीं.

लता-पत्र एकत्र कर बालकों ने एक मण्डप बना लिया, उसमें तथाकथित श्रीगणेश-विग्रह की स्थापना करके मानसिक पूजा- फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल, दक्षिणा आदि से आरम्भ की. उनमें से कई एक पण्डितों का स्वाँग बनाकर पुराणों और शास्त्रों की चर्चा करने लगे. इस प्रकार श्रीगणेश की उपासना में उनका मन लग गया. वे दोपहर को भोजन करने घर नहीं आते थे, इसलिये दुबले हो गये. उनके पिताओं ने कल्याण सेठ से कहा कि यदि बल्लाल का वन में जाना नहीं रोका गया तो हम लोग राजा से शिकायत करके आपको पल्लीनगरी से बाहर निकलवा देंगे. कल्याण का मन चिन्तित हो उठा.

+ + + +

'ये तो नकली गणेश है, बच्चों! असली गणेश तो हृदय में रहते हैं.' कल्याण ने डंडे से बल्लाल को सावधान किया.

'पिताजी! आप जो कुछ भी कह रहे हैं, वह आपकी दृष्टि में सत्य है, पर मेरी निष्ठा तो श्रीगणेश के इसी श्रीविग्रह में है. मैं पूजा नहीं छोड़ सकता.' बल्लाल का इतना कहना था कि सेठ ने उसे मारना आरम्भ किया, अन्य बालक भाग निकले. सेठ ने मण्डप तोड़ डाला और बल्लाल को एक मोटे रस्से से पेड़ के तने में बाँध दिया.

'यदि इस विग्रह में श्रीगणेश होंगे तो तुम्हारा बन्धन खुल जाएगा. इस निर्जन वन में वे ही तुम्हारी रक्षा करेंगे.' ऐसा कहकर कल्याण ने घर का रास्ता लिया.

'निस्संदेह श्रीगणेश ही मेरे माता-पिता हैं. वे दयामय ही हैं. वे विघ्न-विदारक, सिद्धि-दायक, सर्व समर्थ हैं. मैं उनकी शरण में अभय हूँ.' बल्लाल की निष्ठा बोल उठी. वह हृदय में करुणा का वेग समेटकर निर्निमेष नेत्रों से श्रीगणेश के विग्रह को देखने लगा.

'मेरा तन भले ही बाँधा जाय, पर मेरा मन स्वतन्त्र है. मैं अपना प्राण श्रीगणेश के चरणों में अर्पित करूँगा.' बल्लाल के इस निश्चय से भगवान् श्रीगणेश उस पाषाण से प्रकट हो गये.

'तुम्हारी निष्ठा धन्य है वत्स!' श्रीगणेश ने उसका आलिंगन किया. वह बन्धनमुक्त हो गया. उसने अपने आराध्य की खुलकर स्तुति की. श्रीगणेश ने उसे अभय दान दिया और स्वयं अन्तर्धान हो गये.

(गणेशपुराण, अ. २२)

गरुड़, सुदर्शन चक्र और श्रीकृष्ण की रानियों का गर्व-भंग

भगवान श्रीकृष्ण बने श्रीराम

एक बार भगवान् श्रीकृष्ण ने गरुड़ को यक्षराज कुबेर के सरोवर से सौगन्धिक कमल लाने का आदेश दिया. गरुड़ को यह अहंकार तो था ही कि मेरे समान बलवान् तथा तीव्रगामी प्राणी इस त्रिलोकी में दूसरा कोई नहीं है. वे अपने पंखों से हवा को चीरते तथा दिशाओं को प्रतिध्वनित करते हुए गन्धमादन पहुँचे और पुष्पचयन करने लगे. महावीर हनुमान् जी का वहीं आवास था. वे गरुड़ के इस अनाचार को देखकर उनसे बोले- 'तुम किसके लिये यह फूल ले जा रहे हो और कुबेर की आज्ञा के बिना ही इन पुष्पों का क्यों विध्वंस कर रहे हो?'

गरुड़ ने उत्तर दिया- 'हम भगवान् श्रीकृष्ण के लिये इन पुष्पों को ले जा रहे हैं. भगवान् के लिये हमें किसी की अनुमति आवश्यक नहीं दीखती.' गरुड़ की इस बात से हनुमान् जी कुछ क्रुद्ध हो गये और उन्हें पकड़कर अपनी काँख में दबाकर आकाशमार्ग से द्वारका की ओर उड़ चले. उनकी भीषण ध्वनि से सारे द्वारकावासी संत्रस्त हो गये. सुदर्शन चक्र हनुमान्जी की गति को रोकने के लिये उनके सामने जा पहुँचा. हनुमान्जी ने झट उसे दूसरी काँख में दाब लिया. भगवान् श्रीकृष्ण ने तो यह सब लीला रची ही थी. उन्होंने अपने पार्श्व में स्थित रानियों से कहा- 'देखो, हनुमान क्रुद्ध होकर आ रहे हैं. यहाँ यदि उन्हें इस समय सीता-राम के दर्शन न हुए तो वे द्वारका समुद्र में डुबो देंगे. अतएव तुममें से तुरंत कोई सीता का रूप बना लो, मैं तो देखो यह राम बना.' इतना कहकर वे श्रीराम के रूप में परिणत होकर बैठ गये. अब जानकीजी का रूप बनने को हुआ, तब कोई भी न बना सकीं. अन्त में उन्होंने श्रीराधाजी का स्मरण किया. वे आयीं और झट श्रीजानकी जी का स्वरूप बन गयीं.

इसी बीच हनुमान्जी वहाँ उपस्थित हुए. वहाँ वे अपने इष्टदेव श्रीसीताराम जी को देखकर उनके चरणों में गिर गये. इस समय भी वे गरुड़ और सुदर्शनचक्र को बड़ी सावधानी से अपने दोनों बगलों में दबाये हुए थे. भगवान् श्रीकृष्ण ने (राम-वेश में) उन्हें आशीर्वाद दिया और कहा- 'वत्स! तुम्हारी काँखों में यह क्या दिखलायी पड़ रहा है?' हनुमान्जी ने उत्तर दिया- 'कुछ नहीं सरकार! यह तो एक दुबला-सा क्षुद्र पक्षी निर्जन स्थान में मेरे श्रीराम भजन में बाधा डाल रहा था, इसी कारण मैंने इसे पकड़ लिया. दूसरा यह चक्र-सा एक खिलौना है, यह मेरे साथ टकरा रहा था, अतएव इसे भी दाब लिया है. आपको यदि पुष्पों की आवश्यकता थी तो मुझे क्यों नहीं स्मरण किया गया? यह बेचारा पखेरू महाबली शिवभक्त यक्षों के सरोवर से बलपूर्वक पुष्प लाने में कैसे समर्थ हो सकता है?'

भगवान् ने कहा- 'अस्तु! इन बेचारों को छोड़ दो. मैं तुम्हारे ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हूँ, अब तुम जाओ, अपने स्थान पर स्वच्छन्दता पूर्वक भजन करो.'

भगवान् की आज्ञा पाते ही हनुमान्जी ने सुदर्शन चक्र और गरुड़ को छोड़ दिया तथा उन्हें पुनः प्रणाम करके 'जय राम' कहते हुए गन्धमादन की ओर चल दिये. गरुड़ को गति का, सुदर्शन को शक्ति का और पट्टमहिषियों को सौन्दर्य का जो बड़ा गर्व था, वह एकदम चूर्ण हो गया. **(ब्रह्मवैवर्त पुराण)**

श्रीगणेशजी की उत्पत्ति का प्रसंग और चतुर्थी-तिथि का माहात्म्य

पूर्व समय की बात है, सम्पूर्ण देवता और तपोधन ऋषिगण जब कार्य आरम्भ करते तो उन्हें निश्चय ही सिद्धि प्राप्त हो जाती थी. कालान्तर में ऐसी स्थिति आ गयी कि अच्छे मार्ग पर चलने वाले लोग विघ्न का सामना करते हुए किसी प्रकार कार्य में सफलता पाने लगे और निकृष्ट कार्यशील व्यक्ति की कार्य-सिद्धि में कोई विघ्न नहीं आता था. तब पितरों सहित सम्पूर्ण देवताओं के मन में यह चिन्ता उत्पन्न हुई कि 'विघ्न तो असत्-कार्यों में होना चाहिये, सत्कार्यों में नहीं, ऐसा क्यों हो रहा है'- इस विषय पर वे परस्पर विचार करने लगे. इस प्रकार मन्त्रणा करते-करते उने देवताओं के मन में भगवान् शंकर के पास जाकर इस समस्या को सुलझाने की इच्छा हुई. तब वे कैलास पहुँचे और परम गुरु शंकर को प्रणाम कर विनय पूर्वक इस प्रकार प्रार्थना करने लगे- 'देवाधिदेव महादेव! असुरों के कार्यों में ही विघ्न उपस्थित करना आपके लिये उचित है, हमारे कार्यों में नहीं.'

देवताओं के इस प्रकार कहने पर भगवान् शंकर अत्यन्त प्रसन्न हुए और निर्निमेष दृष्टि से भगवती उमा को देखने लगे. देवता भी वहीं थे. पार्वती की ओर देखते हुए, वे मन-ही-मन सोचने लगे- 'अरे! इस आकाश का कोई स्वरूप क्यों नहीं दीखता? पृथ्वी, जल, तेज और वायु की मूर्ति तो चक्षुगोचर होती है, किंतु आकाश की मूर्ति क्यों नहीं दीखती.' ऐसा सोचकर ज्ञानशक्ति के भण्डार परम पुरुष भगवान् रुद्र हँस पड़े. अभी हँसी बंद भी नहीं हुई थी कि उनके मुख से एक परम तेजस्वी कुमार प्रकट हो गया, वही गणेश के नाम से प्रसिद्ध हुआ. उसका मुख प्रचण्ड तेज से चमक रहा था. उस तेज से दिशाएँ चमकने लगीं. भगवान् शिव के सभी गुण उसमें संनिहित थे. ऐसा जान पड़ता था, मानो साक्षात् दूसरे रुद्र ही हों. वह महात्मा कुमार प्रकट होकर अपनी सस्मित दृष्टि, अद्भुत कान्ति, दीप्त मूर्ति तथा रूप के कारण देवताओं के मन को मोहित कर रहा था. उसका रूप बड़ा ही आकर्षक था. भगवती उमा उसे निर्निमेष दृष्टि से देखने लगीं. उन्हें उसकी ओर टकटकी लगाये देखकर भगवान् रुद्र के मन में क्रोध का आविर्भाव हो गया. अतः उन परम प्रभु ने उस कुमार को शाप देते हुए कहा- 'कुमार! तुम्हारा मुख हाथी के मुख-जैसा और पेट लम्बा होगा. सर्प ही तुम्हारे यज्ञोपवीत का काम देंगे- यह नितान्त सत्य है.'

इस प्रकार कुमार को शाप देने पर भी भगवान् शंकर का रोष शान्त नहीं हुआ. उनका शरीर क्रोध से काँप रहा था. वे उठकर खड़े हो गये. त्रिशूलधारी रुद्र का शरीर जैसे-जैसे हिलता था, वैसे-वैसे उनके श्रीविग्रह के रोमकूपों से तेजोमय जल निकलकर बाहर गिरने लगा. उससे दूसरे अनेक विनायक उत्पन्न हो गये. उन सभी के मुख हाथी के मुख- जैसे थे तथा उनके शरीर की आभा काले खैर-वृक्ष या अँजन के समान थे. वे हाथों में अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लिये हुए थे.

उस समय उन विनायकों को देखकर देवताओं की चिन्ता अत्यधिक बढ़ गयी. पृथ्वी में क्षोभ उत्पन्न हो गया. तब चतुर्मुख ब्रह्माजी हँस पर विराजमान होकर आकाश में आये और यों कहा- 'देवताओं! तुम लोग धन्य हो. तुम सभी त्रिलोचन एवं अद्भुत रूपधारी भगवान् रुद्र के कृपापात्र हो. साथ ही तुमने असुरों के कार्य में विघ्न उत्पन्न करने वाले गणेश को प्रणाम करने का सौभाग्य प्राप्त किया है.' उनसे इस प्रकार कहने के पश्चात् ब्रह्माजी ने भगवान् रुद्र से कहा- 'विभो! अपने मुख से प्रकट हुए इस बालक को ही आप इन विनायक का स्वामी बना दें. ये विनायक इनके अनुगामी-अनुचर बनकर रहें. प्रभो! साथ ही मेरी प्रार्थना है कि आपके वर-प्रभाव से आकाश को भी शरीरधारी बनकर पृथ्वी आदि चारों महाभूतों में रहने का सुअवसर मिल जाय. उससे एक ही आकाश अनेक प्रकार से व्यवस्थित हो सकता है.'

इस प्रकार भगवान् रुद्र और ब्रह्माजी बातें कर ही रहे थे कि विनायक वहाँ से चले गये. फिर पितामह ने शम्भु से कहा- 'देव! आपके हाथ में अनेक समुचित अस्त्र हैं. अब आप ये अस्त्र तथा वर इस बालक को प्रदान करें, यह मेरी प्रार्थना है.' ऐसा कहकर ब्रह्माजी वहाँ से चले गये. तब भगवान् शंकर ने अपने सुपुत्र गणेश से कहा- 'पुत्र! विनायक, विघ्नहर, गजास्य और भवपुत्र- इन नामों से तुम प्रसिद्ध होगे. क्रूर-दृष्टि वाले ये विनायक बड़े ही उग्र स्वभाव के हैं. पर ये सब तुम्हारी सेवा करेंगे. प्रकृष्ट यज्ञ, दान आदि शुभ कर्म के प्रभाव से शक्तिशाली बनकर ये कार्यों में सिद्धि प्रदान करेंगे. तुम्हें देवताओं, यज्ञों तथा अन्य कार्यों में भी सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा. सर्वप्रथम पूजा पाने का अधिकार तुम्हारा होगा. यदि ऐसा न हुआ तो तुम्हारे द्वारा उस कार्य की सफलता बाधित होगी.'

जब ये बातें समाप्त हो गयीं, तब भगवान् शंकर ने देवताओं के साथ विभिन्न तीर्थों के जल से पूर्ण सुवर्ण कलशों के जल द्वारा गणेश का अभिषेक किया. इस प्रकार जल से अभिषिक्त होकर विनायकों के स्वामी भगवान् गणेश की अद्भुत शोभा होने लगी. उन्हें अभिषिक्त देखकर सभी देवता भगवान् शंकर के सामने ही उनकी इस प्रकार स्तुति करने लगे-

'गजानन! आपको नमस्कार है. गणनायक! आपको प्रणाम है. विनायक! आपको नमस्कार है. चण्डविक्रम! आपको अभिवादन है. आप विघ्नों का विनाश करने वाले हैं, आपको प्रणाम है. सर्प की करधनी से सुशोभित भगवन्! आपको अभिवादन है. आप रुद्र के मुख से उत्पन्न हुए हैं तथा लम्बे उदर से सुशोभित हैं, आपको नमस्कार है. हम सभी देवता आपको प्रणाम करते हैं, अतः आप सर्वदा विघ्नों को शान्त करें.'

जब इस प्रकार भगवान् रुद्र ने महापुरुष श्रीगणेशजी का अभिषेक कर दिया और देवताओं द्वारा उनकी स्तुति सम्पन्न हो गयी, तब वे भगवती पार्वती के पुत्र- रूप में शोभा पाने लगे. गणाध्यक्ष गणेशजी की (जन्म एवं अभिषेक आदि) सारी क्रियाएँ चतुर्थी तिथि के दिन ही सम्पन्न हुई थीं. अतएव तभी से यह तिथि समस्त तिथियों में परम श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त हुई. जो भाग्यशाली मानव इस तिथि को तिलों का आहार कर भक्तिपूर्वक गणपति की आराधना करता है, उस पर वे अत्यन्त शीघ्र प्रसन्न हो जाते हैं- इसमें कोई संशय नहीं है. जो व्यक्ति इस कथा का पठन-पाठन अथवा श्रवण करता है, उसके पास विघ्न कभी नहीं फटकते और न उसके पास लेशमात्र पाप ही शेष रह जाता है. **(वराह पुराण अध्याय 23)**

पावन प्रसंग

सच्चा सन्त

द्वारकाधीश मन्दिर की पहली सीढ़ी के दाहिने किनारे पर वर्षों से एक दृष्टिहीन भिक्षुक टाट बिछाकर बैठा रहता था. मन्दिर में आने-जाने वाले श्रद्धालु उसके टाट पर कभी आठ आने या एक रुपया डाल देते, जिसे वह हाथ में टटोलकर उठा लेता और टाट के नीचे रख देता. कुछ लोग उसके हाथ पर भगवान् का प्रसाद भी रख देते थे. पास ही में हलवाई की दूकान थी. सर्दी के दिनों में रात को वह हलवाई की भट्टी के सामने की गर्म जमीन पर पड़कर सो जाया करता था.

एक दिन उसे अपने आसपास कुछ हलचल लगी और बहुत-से लोगों के पैरों की आहट का आभास हुआ. उसने कहा- 'आज क्या हो रहा है?...' एक युवक बोला- 'भगवान् के अन्नकूट के लिये चन्दा इकट्ठा किया जा रहा है.' उसने जल्दी से टाट के नीचे टटोला और सारे पैसे उठाकर युवक के हाथ में दे दिये. उसमें भी सौ रुपये की तीन नोट थे और बाकी सब सिक्के थे. 'बाबा! आपने तो सारे पैसे दे दिये- कुछ तो कल के लिये भी रख लेते.'

'जिसने दिये हैं, उसी को अर्पण कर रहा हूँ. कल का हिसाब भी कर देगा.' यह कहकर सन्त पुनः ध्यानमग्न हो गये.

पाँच महातीर्थ

(1) पितृतीर्थ : नरोत्तम नाम का एक तपस्वी ब्राह्मण था. वह माता-पिता की सेवा छोड़कर तीर्थयात्रा के लिये निकल पड़ा. तीर्थ-सेवन की महिमा से उसके गीले कपड़े आकाश में सूखते थे. इस चमत्कार से उसके मन में अभिमान उत्पन्न हो गया. वह आकाश की ओर देखकर कहने लगा- 'मेरे समान दूसरा तपस्वी कौन है, जिसके वस्त्र आकाश में सूखते हैं?'- इस वाक्य के पूरा होते-होते उसके मुँह पर बगुले ने बीट कर दी. ब्राह्मण क्रोध से आग-बबूला हो गया. उसने बगुला को शाप दे दिया, जिससे वह जलकर भस्म हो गया.

इस शाप से ब्राह्मण की तपस्या नष्ट हो गयी, जिससे उसके वस्त्रों का आकाश में सूखना बंद हो गया. इस घटना से ब्राह्मण को मर्मान्तक वेदना हुई. तब आकाशवाणी हुई- 'ब्राह्मण! तुम मूक चाण्डाल के पास जाओ, वहाँ तुम्हें धर्म का ज्ञान प्राप्त होगा.' ब्राह्मण मूक चाण्डाल के पास पहुँचा. उस समय मूक चाण्डाल अपने पिता-माता की सेवा में तन्मय था. इस सेवा से प्रसन्न होकर भगवान् विष्णु उसके घर में निवास करते थे. माता-पिता की सेवा की महिमा से उसका घर बिना खम्भों के आकाश में टिका था. यह देखकर ब्राह्मण को महान् आश्चर्य हुआ. उसने मूक चाण्डाल से आकाशवाणी की बात सुनायी और प्रार्थना की कि आप मुझे ज्ञान का उपदेश दें. मूक ने नम्रता के साथ कहा- 'देवता! आप थोड़ी देर प्रतीक्षा कीजिये. मेरी सेवा से माता-पिता को संतोष हो जाएगा, तब मैं आपकी सेवा करूँगा.' इतना सुनते ही ब्राह्मण क्रुद्ध होकर उसकी भर्त्सना करने लगा. अंत में मूक को कहना पड़ा कि 'मैं बगुला नहीं हूँ कि आपके जलाये जल जाऊँगा. आपको जल्दी हो तो पतिव्रता के पास जाइये. उससे आपका काम सिद्ध हो जाएगा.' ब्राह्मण जब पतिव्रता के घर की ओर बढ़ा, तब विष्णु भगवान् जो ब्राह्मण के रूप में मूक के घर में बैठे थे, उसके साथ हो लिये.

(2) पतितीर्थ : नरोत्तम ने ब्राह्मण से पूछा- 'तुम ब्राह्मण होते हुए भी चाण्डाल के घर में क्यों रहते हो?' भगवान् ने कहा- 'अभी तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र नहीं है. पीछे तुम पहचान जाओगे.' भगवान् ने पतिव्रता के सम्बन्ध में नरोत्तम को बतलाते हुए उसकी असीम शक्तियों की प्रशंसा की. जब पतिव्रता का घर पास आया, तब भगवान् अदृश्य हो गये. नरोत्तम ने पतिव्रता के घर में भी उस ब्राह्मण को बैठे देखा. नरोत्तम ने पतिव्रता से प्रार्थना की कि तुम मुझे धर्म का उपदेश करो. पतिव्रता ने निवेदन किया कि 'मेरी पति-सेवा अधूरी है. उसे पूरी कर आपकी सेवा करूँगी, तब तक आप जलपान कर विश्राम कर लें.' सुनते ही नरोत्तम क्रुद्ध हो गया और शाप तक देने को तैयार हो गया. तब पतिव्रता ने कहा- 'महाराज! पुत्र के लिये जिस तरह माता-पिता की सेवा से बढ़कर दूसरा धर्म नहीं है, उसी तरह पत्नी के लिये पति-सेवा से बढ़कर अतिथि आदि सेवा नहीं है. इसलिये पति को अपनी सेवा से संतुष्ट कर लूँगी, तभी आपकी सेवा कर पाऊँगी. यदि आपको जल्दी है तो तुलाधार वैश्य के पास जाइये.' नरोत्तम तुलाधार वैश्य के घर की ओर बढ़ा.

(3) समतातीर्थ : ब्राह्मणरूपधारी भगवान् नरोत्तम के पास फिर आये और बोले- 'ब्रह्मन! चलिये, मैं तुलाधार के पास ले चलता हूँ.' जब वे दोनों तुलाधार के पास पहुँचे तो वहाँ बहुत बड़ी भीड़ एकत्र थी. बहुत-से पुरुष और स्त्रियाँ उसे चारों ओर से घेरकर खड़े थे. ब्राह्मण को आया देखकर तुलाधार ने मीठी वाणी से पूछा- 'द्विजश्रेष्ठ! आपका यहाँ कैसे पधारना हुआ है?' ब्राह्मण ने कहा- 'आप मुझे धर्म का उपदेश दीजिये.' तुलाधार ने कहा- 'महाराज! मैं वैश्य हूँ, व्यापार मेरा मुख्य धर्म है. व्यापार सम्बन्धी बातों में पहर भर रात बीत जाएगी. आपका आतिथ्य करना मेरा धर्म है, किंतु व्यापार मेरा परम धर्म है. उस परम धर्म के पूरा होने पर ही मैं आपकी सेवा कर सकूँगा. अतः आप धर्माकर के पास जायँ. मैं व्यापारियों की गुत्थियाँ सुलझा रहा हूँ. इस तरह व्यापारियों में समरूप से व्याप्त परमेश्वर की ही सेवा कर रहा हूँ.

नरोत्तम वहाँ से आगे बढ़ा और भगवान् उसके साथ हो लिये. नरोत्तम ने ब्राह्मणरूपधारी भगवान् से पूछा- 'तुलाधार में क्या विशेषता है?' भगवान् ने बताया कि वह तुलाधार अपने वैश्य-धर्म में स्थिर रहकर सब प्राणियों में भगवान् को देखता हुआ वैश्यधर्म का व्यावहारिक उपदेश देता रहता है. इस तरह प्रातः से रात तक सबका भला

करता रहता है.'

(4) अद्रोहतीर्थ : नरोत्तम ने ब्राह्मण से धर्माकर का परिचय पूछा. भगवान् ने बतलाया- 'एक बार एक राजकुमार को कहीं बाहर जाना था. उसे अपनी पत्नी की सुरक्षा की चिन्ता थी. धर्माकर के पास अपनी स्त्री को रखने में उसे संतोष था. वह अपनी नवयुवती स्त्री को धर्माकर के पास ले गया और उससे प्रार्थना की कि 'आप छः महीने तक मेरी पत्नी की रक्षा का भार वहन करें.' धर्माकर ने कहा- 'राजन्! मैं आपका सगा-सम्बन्धी नहीं हूँ तो फिर अपनी पत्नी को मेरे पास छोड़कर आप निश्चिन्त कैसे रह सकेंगे?' राजकुमार ने दृढ़ता के साथ कहा- 'मैं आपके चरित्र से अवगत हूँ और निश्चिन्त होकर ही आया हूँ. आप मेरी बात न ठुकरायें.' धर्माकर को राजकुमार की बात माननी पड़ी. धर्माकर ने बहुत ही सावधानी के साथ राजकुमार की पत्नी की देखभाल की. छः महीने तक उसने अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन किया. उसकी साध्वी पत्नी भी पति के कार्य में प्रसन्नतापूर्वक हाथ बँटा रही थी.

छः महीने बाद जब राजकुमार परदेश से लौटा, तब सीधे धर्माकर के पास आया. रास्ते में लोग कई तरह की बातें कर रहे थे. किसी ने राजकुमार से कहा- 'भाई! तुमने अपनी स्त्री धर्माकर को सौंप दी है. वह अपने-आपको कैसे सँभाल सकता है?' यही बात बहुत-से लोग दोहरा रहे थे. धर्माकर तो सब कुछ जान ही लेता था. राजकुमार से कही जाने वाली ये बातें भी उसे ज्ञात हो गयीं. उसने लोकापवाद हटाने के लिये एक योजना बनायी. अपने दरवाजे पर लकड़ियों का एक ढेर लगवाया और उसमें आग लगा दी. ठीक इसी समय राजकुमार उसके पास पहुँचा. राजकुमार ने धर्माकर और अपनी पत्नी को देखा. दोनों बैठे हुए थे. पत्नी तो पति को देखकर अत्यन्त प्रसन्न हो रही थी, किंतु धर्माकर चिन्तित था. राजकुमार ने धर्माकर से पूछा- 'मित्र! मैं बहुत दिनों के बाद आपके पास लौटा हूँ, आप मुझसे बात क्यों नहीं करते? चिन्तित क्यों हैं?

धर्माकर ने कहा- मित्र! लोकनिन्दा के कारण मेरा किया-कराया सब चौपट हो गया, अतः मैं अग्नि में प्रवेश करूँगा. देवता और मनुष्य मेरे इस कार्य को देखें. इतना कहकर धर्माकर धधकती हुई आग में प्रवेश कर गया, किंतु धर्माकर का बाल भी बाँका नहीं हुआ. आकाश से देवता लोग साधुवाद देते हुए फूलों की वृष्टि करने लगे. जिन लोगों ने धर्माकर के सम्बन्ध में झूठी किवदन्तियाँ उड़ायी थीं, उनके मुख पर कोढ़ हो गया. देवताओं ने प्रकट होकर धर्माकर को आग से निकाला और मालाएँ पहनायीं. तब से धर्माकर का नाम सज्जनाद्रोहक हो गया; क्योंकि धर्माकर किसी से द्रोह नहीं करते थे. शत्रु से भी प्रेम का व्यवहार रखते थे.

देवताओं ने राजकुमार से कहा- 'तुम अपनी इस पत्नी को स्वीकार करो. इस समय सज्जनाद्रोहक के समान पृथ्वी पर कोई अन्य पुरुष नहीं है, जिसने काम और लोभ पर इस तरह विजय पायी हो.' देवताओं ने सबके सामने सज्जनाद्रोहक की भूरि-भूरि प्रशंसा की और वे अपने-अपने विमानों पर बैठकर देवलोक पधार गये. राजकुमार ने अद्रोहक से अपनी कृतज्ञता प्रकट की और वह पत्नी के साथ राजमहल में लौट आया.'

भगवान् ने जब यह कथा समाप्त की, तब अद्रोहक का घर समीप आ गया था. भगवान् नरोत्तम को अद्रोहक के पास भेजकर स्वयं अन्तर्हित हो गये. नरोत्तम ने अद्रोहक के सामने अपनी धर्मसम्बन्धी जिज्ञासा रखी. अद्रोहक ने नरोत्तम का आतिथ्य किया और समझाया कि आप वैष्णव सज्जन के पास जाइये. उनसे आपकी सब कामनाएँ पूरी हो जाएँगी.

(5) भक्तितीर्थ : नरोत्तम वैष्णव के घर की ओर जब बढ़ा, तब ब्राह्मणरूपधारी भगवान् पुनः मिल गये. नरोत्तम ने भगवान् से पूछा कि जिस वैष्णव सज्जन के पास हम चल रहे हैं, उनकी क्या विशेषता है? भगवान् ने समझाया कि वैष्णव भगवान् में अनन्य प्रेम करता है. इसलिये भगवान् उसके मंदिर में प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान रहते हैं. जब वैष्णव सज्जन का घर समीप आया, तब भगवान् पुनः अन्तर्हित हो गये. नरोत्तम ने वैष्णव सज्जन के सामने अपनी जिज्ञासाएँ रखीं. वैष्णव ने कहा- 'विप्रवर! तुम्हें देखकर मेरा हृदय उल्लसित हो रहा है. तुम पर भगवान् विष्णु प्रसन्न हैं. अतः आज तुम्हारी सभी कामनाएँ पूरी हो जाएँगी. मेरे घर के मंदिर में भगवान् विष्णु साक्षात् विराजमान हैं. आप जाकर उनके दर्शन कीजिये.'

जब ब्राह्मण मंदिर में गया तो देखता है कि जो ब्राह्मण उसके साथ लगे थे, वही ब्राह्मण कमल के आसन पर विराजमान हैं. नरोत्तम ने उन्हें साष्टाँग प्रणाम किया और कहा- 'यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो अपने स्वरूप का दर्शन दें.' भगवान् ने नरोत्तम की प्रार्थना स्वीकार की. नरोत्तम उनके दिव्य रूप को देखकर तृप्त हो गये. भगवान् बोले- 'भक्तों पर मेरा प्रेम सदा बना रहता है. प्रेम के कारण ही तुम्हें पुण्यात्मा पुरुषों के दर्शन कराये हैं. तुमसे एक भूल हो गयी है. तुम्हारे माता-पिता तुमसे आदर नहीं पा रहे हैं, अतः तुम जाकर उनकी पूजा करो. उनके दुःख और क्रोध से तुम्हारी तपस्या नष्ट होती जाती है. जिस पुत्र पर माता-पिता का कोप रहता है, वह सीधे नरक में जाता है. त्रिदेव भी उसे नरक में जाने से बचा नहीं सकते. इसलिये तुम घर लौट जाओ और माता-पिता को मेरी मूर्ति समझकर पूजा करो. उनकी कृपासे तुम मुझे प्राप्त करोगे.'

नरोत्तम को अपनी भूल मालूम पड़ी. वह माता-पिता को भगवान् समझकर बहुत सम्मान करने लगा और मूक चाण्डाल की तरह उनकी सेवा में संलग्न रहने लगा. अंत में वह परमगति को प्राप्त हुआ. (पद्मपुराण सृष्टि.)

श्राद्ध-पक्ष 14 सितम्बर से आरम्भ पर विशेष

गया-श्राद्ध से प्रेतत्व-मुक्ति

(1) एक व्यक्ति कहीं जा रहा था, वह था वैश्यवर्ण का. रास्ते में उसकी एक प्रेत से भेंट हो गयी. दुःख झेलते-झेलते प्रेत बहुत अद्विग्न हो गया था. उसने उससे प्रार्थना की- 'महोदय! यदि आप मुझ पर दया करके गया में मेरा श्राद्ध कर दें, तो मेरा इस योनि से छुटकारा हो जाय और आपको भी स्वर्ग मिल जाय.'

वैश्य का हृदय करुणा से भर गया. उसने बन्धुओं से परामर्श लेकर गया में उस प्रेत के उद्देश्य से श्राद्ध कर दिया. उसके बाद उसने अपने पितरों का भी श्राद्ध किया. उस श्राद्ध से वह प्रेत और उसके माता-पिता सब-के-सब मुक्त हो गये. इस श्राद्ध के फलस्वरूप श्राद्धकर्ता वैश्य को भी स्वर्ग मिला.

(2) विशाला नगरी के राजकुमार का नाम भी विशाल था. विवाह हुए उसके बहुत दिन बीत चुके थे, किंतु उसे कोई संतान न हुई, इससे वह चिन्तित रहता था. एक दिन उसने ब्राह्मणों और संतों को बुलाया और उनसे पुत्र होने का उपाय पूछा. ब्राह्मणों ने गया में श्राद्ध करने को कहा.

राजा ने बहुत श्रद्धा और भक्ति से गया जाकर श्राद्ध-कर्म को सम्पन्न किया. इसके फलस्वरूप उसे संतान की प्राप्ति हुई.

एक दिन उसने आकाश में तीन पुरुषों को देखा- एक का रंग श्वेत था, दूसरे का लाल और तीसरे का आबनूस काला. यह दृश्य विशाल को अद्भुत-सा लगा. उसने उनसे उनका परिचय जानना चाहा. श्वेतरंग वाले पुरुष ने कहा- 'पुत्र! तुम धन्य हो. तुमने पिण्डदान कर हम तीनों का उद्धार कर दिया है. मैं तुम्हारा पिता हूँ. मुझे इन्द्रलोक प्राप्त हुआ है. यह तो मेरा परिचय हुआ. लाल रंग के जिस व्यक्ति को देख रहे हो, ये मेरे पिताश्री हैं. इनसे बहुत-से पाप हो गये थे. ब्रह्महत्या जैसा महापातक भी इनसे बन गया था. काले रंग के जो पुरुष हैं, ये मेरे पितामहश्री हैं. इन्होंने क्रोध में आकर ऋषियों की हत्या कर दी थी. इसलिये ये दोनों अवीचि नामक नरक में घोर यातना सह रहे थे, किंतु गया में तुम्हारे पिण्डदान से ये नरक से मुक्त हो गये हैं. अब हम तीनों-के-तीनों उत्तम लोकों में जा रहे हैं. यह सब तुम्हारे श्राद्ध करने से ही सम्भव हो सका है. तुम धन्य हो! तुमने 'पुत्र' नाम को सार्थक किया है.

इस तरह विशाल धर्म-कार्य कर कृतार्थ हो चुका था. फलस्वरूप वह जीवनभर सुख भोगता रहा और मरने पर उत्तम लोक प्राप्त किया. (गरुड़ पुराण)

राम-नाम महिमा

श्रीराम नाम से जड़ पत्थर तर जाय तो मनुष्य क्यों न तरेगा? श्रीराम नाम से क्या मनुष्य इस भव-सागर से नहीं तर सकेगा? विश्वास रखो, श्रद्धा से श्रीराम नाम का जप करो.

ये मज्जति निमज्जयन्ति च परान् ने पस्तरा दुस्तरे,
वार्धौ येन तरंति वानर भटान् संतारयंतेऽपि च।
नैते ग्राव गुणा न वारिंधि गुणा नो वानराणां गुणाः,
श्रीमद्दाशरथेः प्रतापमहिमा सोऽयं समुज्जृम्भते।।

जो पत्थर स्वयं तो डूबता ही है और दूसरों को भी डूबा देता है वह पत्थर आज तैरने लगा और अनेकों को तारने लगा. यह गुण न तो पत्थर का था न समुद्र का था, न वानरों का था अथवा न नल नील का था. यह प्रभाव तो श्रीराम का था, श्रीराम नाम का था.

नल नील समुद्र पर पुल बाँध रहे थे. पहले दिन चौदह योजन पुला बाँधा, दूसरे दिन बीस योजन, तीसरे दिन तीस योजन, चौथे दिन बाईस योजन और पाँचवें दिन तेईस योजन पुल बाँधा. पाँच दिन में सेतु बन्ध हुआ. सौ योजन का विशाल पुल बँधकर तैयार हो गया.

जिस घर में माता-पिता की सेवा होती है वहाँ कलयुग नहीं आता. लोग भक्ति का कुछ ढोंग कर लेते हैं. पुस्तकों को पढ़कर कुछ ज्ञान की बातें भी करने लगते हैं, परन्तु आजकल अधिक लोग धर्म का पालन करते नहीं. कितने ही तो ऐसा समझते हैं हम तो भक्ति करते हैं, इसलिये भगवान हमारे पापों को भस्म कर देंगे. हम धर्म का पालन न करें तो कोई बाधा नहीं है. अरे स्वधर्म का त्याग महापाप है. धर्म परिवर्तनशील नहीं. प्राण जायँ परन्तु धर्म छोड़ना नहीं.

श्रीराम धर्म के मूर्तिमान स्वरूप हैं. श्रीसीताराम जी का जैसा पवित्र जीवन व्यतीत करो. जगत् में राम-राज्य कब होगा, यह तो रामजी ही जानें. अब जगत में राम-राज्य ही ऐसा आया नहीं. तुम अपने घर में राम-राज्य बनाओ. तुम सभी प्रभु के प्यारे हो, रामायण की कथा सुनते हो. तुम्हारा रामजी के साथ सम्बन्ध हो चुका है. श्रीसीताराम जी को घर में पधराओ. श्रीसीताराम जी की प्रेम से सेवा करो. श्रीरामजी में सभी सद्गुण एकत्रित हैं. रामजी का एक-एक सद्गुण जीवन में उतारो. इस प्रकार की रामजी की सेवा से ही मन शुद्ध होता है. रामजी की मर्यादा पालन करने से ही पाप जलते हैं.

जिस घर में रामजी की मर्यादा का पालन होता है, उसी घर में राम-राज्य होता है. जिस घर में राम-राज्य है, उस घर में बहुत शान्ति होती है. जिस घर में राम-राज्य है, उस घर में कलियुग आता नहीं. राम-राज्य अर्थात् धर्म का राज्य. जिस घर में धर्म का नीति का धन आता है, जिस घर में सभी लोग संयम और सदाचार रखकर परमात्मा के नाम का जप करते हैं, उस घर में कलियुग आता नहीं.

इस कलियुग में भी कितने ही वैष्णव ऐसे हैं, जिनके घर में कलियुग नहीं है. जिस घर में प्रभु के नाम का कीर्तन होता है, जिस घर में गरीब का सम्मान होता है, जिस घर में परमात्मा की सेवा-पूजा होती है, जिस घर में वृद्धों को मान मिलता है, जिस घर में सभी माता-पिता की आज्ञा में रहते हैं, उस घर में किसी दिन भी कलियुग आता नही.

राम-राज्य : श्रीरामजी के गद्दी पर बैठने से प्रजा बहुत सुखी हुई. राम-राज्य में कभी अकाल नहीं पड़ता था. राम-राज्य में आवश्यकता होने पर वृष्टि हो जाती थी. राम-राज्य में कोई दुःखी न था. कोई भिखारी नहीं था. राम-राज्य में किसी के घर झगड़ा नहीं होता था. राम-राज्य में प्रभु का ऐसा प्रभाव था कि जिसकी मृत्यु की इच्छा होती थी उसी को मौत आती थी. बिना इच्छा किसी की मृत्यु भी नहीं होती थी. काल भी राम-राज्य में किसी को पकड़ नहीं सकता था. माता-पिता के जीते जी राम-राज्य में उनके बालक का मरण नहीं होता था, कोई स्त्री विधवा नहीं थी. राम-राज्य में सब धर्म-से-नीति से ही अर्थोपार्जन करते थे. किसी को भी कम परिश्रम करके अधिक कमाने की इच्छा नहीं होती थी. सभी धन को धर्म की मर्यादा में रखते थे. सभी के घर नित्य सत्संग होता था. प्रत्येक घर में रोज राम-नाम का जप होता था. सभी एकादशी का व्रत रखते थे. राम-राज्य में प्रजा बहुत ही सुखी थी.

–साधक, श्री अमरापुर दरबार (डिब्), जयपुर

पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली का

जयपुर 8 जुलाई से 31 जुलाई

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुदेव भगवान सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का निवास ८ जुलाई से ३१ जुलाई तक (२४ दिन) श्री अमरापुर दरबार पर हुआ.

गुरु पूर्णिमा का मंगल पर्व भी आपकी सानिध्यता में हजारों हजार भक्त उल्लसित हुए. प्रेम प्रकाश महिला आश्रम, अग्रवाल फार्म में माता पदमादेवी वर्सी उत्सव १७ जुलाई को पूज्य गुरुदेव भगवान की अध्यक्षता में मनाया गया.

सिंध से आये प्रेमप्रकाशी जत्थे को भी गुरु महाराज जी की चरण-शरण मिली तो वे भी आकंठ आनन्दित हो गये. जयपुर शहर में सिंध यात्रियों के सम्मान में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भी आप सम्मिलित हुए.

३१ जुलाई सायं ४ बजे आपका वृन्दावन के लिए प्रस्थान हुआ.

श्रीवृन्दावन 31 जुलाई–1 अगस्त

गुरुनगरी के गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान से ३१ जुलाई सायं ४ बजे चलकर रात्रि ८ बजे ब्रजभूमि में परिक्रमा मार्ग, पुराने कालियदह मंदिर के पास बने प्रेम प्रकाश मंदिर पहुँचे. यहाँ पर सेवा संभाल करने वाल हांगकांग के श्री कैलाश-किरण रूपचंदानी द्वारा सद्गुरु महाराज जी संतों अतिथियों का आत्मीय अभिनन्दन किया गया. पूज्य गुरु महाराज जी की मण्डली में संत ढालूराम, संत कमललाल, संत योगेशलाल (बबलूराम), गुरुमाता कौशल्या देवी जी, श्री जयकिशन टेकवानी ,श्री सांवलराम शामिल हैं.

१ अगस्त को प्रातः बांकेबिहारी मंदिर में लीला पुरुषोत्तम के दर्शन करके ६ बजे कुरुक्षेत्र के लिए रवाना हुए.

कुरुक्षेत्र 1 अगस्त

द्वापर युग का वह पावन क्षेत्र जहाँ पर महाभारत युद्ध लड़ा गया था, जिसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा समूचे संसार को गीता संदेश दिया गया था- उसी पुण्यमयी क्षेत्र के गीता आश्रम पर १ अगस्त सायंकाल को पहुँचे. २ अगस्त को प्रातः संतों की सेवा अन्नक्षेत्र में करके धर्मशाला के लिए प्रस्थान किया.

धर्मशाला 2 अगस्त से

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली हिमाचल प्रदेश के रमणीय स्थल धर्मशाला में स्थित श्री प्रेम प्रकाश स्वर्गाश्रम २ अगस्त को गोधूलि वेला में ३:३० बजे पहुँचे. यहाँ पर सेवा संभाल देख रहे श्री रामचन्द्र, श्री गणेशराम, विद्यार्थी किशोरलाल, रायपुर की माता गीता देवी ने सद्गुरु महाराज जी संतों का हार्दिक स्वागत किया. २ से ६ अगस्त तक सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का पुण्योत्सव (वर्सी उत्सव) सद्गुरु महाराज जी के सानिध्य में यहाँ पर मनाया गया. इस अवसर पर विद्यालयों में भी बालक बालिकाओं को भण्डारा खिलाकर उपयोगी वस्तुएँ उपहार स्वरूप दी गईं.

सद्गुरु सर्वानन्द जल–समाधि दिवस

हरिद्वार। महर्षि गुरुवर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की पार्थिव देह को आपकी इच्छानुसार अवसान के तीसरे दिन हरिद्वार में १०नं. घाट पर माँ गंगा में प्रवाहित किया गया था- उसी पावन पुण्यमयी स्मृति में प्रतिवर्ष गुरुदेव भगवान का जल समाधि दिवस हरिद्वार में मनाया जाता है. इस उपलक्ष में भोपतवाला स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम से हरि नाम संकीर्तन प्रभातफेरी १०नं. घाट जो अब सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द स्मृति स्थल के नाम से देवनगरी हरिद्वार में जाना जाता है- तक निकाली गई. यहाँ पर हवन, ध्वजावंदन, विशेष पूजा अर्चना करके महाराजश्री की स्मृताजँलि दी गई. यहाँ से लौटकर आश्रम पर संतों का भण्डारा एवं अन्य अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए. पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, पूज्य स्वामी जयदेवजी महाराज, संत मोनूरामजी, संत नंदलालजी, संत श्यामलालजी, संत योगेशलाल (बबलूराम), संत विनेशलाल, विद्यार्थी राहुल, श्री माणिकमुक्त एवं हरिद्वार के संत रमेशलालजी, संत हिमांशुलालजी (हरिद्वार आश्रम की सेवा संभाल देखने वाले), संत सुमितलाल, संत यश एवं १०० से अधिक प्रेमी जो जयपुर, दिल्ली व अन्य नगरों से आये थे- जल समाधि दिवस में शामिल हुए.

जनोपयोगी कार्य

236 भक्त बने रक्तदानी

जयपुर : श्री अमरापुर दरबार की स्वयंसेवी संस्थाओं श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल, श्री प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली, श्री प्रेम प्रकाश महिला सेवा मण्डली के संयुक्त सद्प्रयासों से १६ जुलाई- गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर श्री अमरापुर दरबार पर विशाल रक्तदान शिविर लगाया गया. श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुदेव सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डल के सानिध्य में जयपुर सहित देश दुनिया से आये १५६ भक्तों ने रक्तदान करके महापुण्य संचय किया.

ग्वालियर : स्वामी शान्तिप्रकाश धर्मार्थ चिकित्सालय एवं श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा १६ जुलाई-गुरुपूर्णिमा के महान सुअवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ. शिविर में संत हरिओमलालजी, माता लाजवंती के सानिध्य में पुण्यभागी ८० भक्त बने रक्तदानी.

स्वास्थ्य शिविर

अहमदाबाद : कोतरपुर के स्वामी टेऊँराम नगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में २७ जुलाई को संत मोनूराम जी के सानिध्य मे सिंधु अस्पताल के सहयोग से स्वास्थ्य शिविर का आयोजन हुआ जिसमें शहर के प्रतिष्ठित चिकित्सकों ने ११० लोगों का परीक्षण किया- उनको स्वस्थ रहने के लिए परामर्श व दवाईयाँ निःशुल्क दी गईं

कोटा : श्री प्रेम प्रकाश युवा मंडल द्वारा २८ जुलाई को एम. बी. एस. हॉस्पिटल में संत श्यामलाल जी के साथ जाकर वहाँ पर उपचारार्थ भर्ती रोगियों की सेवा करके उनको चाय, पोहा, फलादि वितरित किये गये.

डबरा : प्रेम प्रकाश आश्रम में १४ जुलाई को संत छोटूराम के सानिध्य में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में १०० से अधिक लोगों का परीक्षण ख्यात चिकित्सकों द्वारा किया गया. उचित परामर्श व जरूरत अनुसार निःशुल्क दवाईयाँ भी दी गईं.

स्वामी टेऊँराम एक्यूप्रेशर+योग शिविर

हैदराबाद : गुरुपूर्णिमा के शुभ अवसर पर हैदराबाद की गुरुभक्त माता प्रेमप्रकाशी नैना सबदानी द्वारा सहयोगियों के साथ निःशुल्क सद्गुरु स्वामी टेऊँराम एक्यूप्रेशर चिकित्सा एवं योग शिविर का आयोजन किया गया. शिविर में २१८ लोगों को शारीरिक दर्दमुक्त जीवन जीने के टिप्स एवं एक्यूप्रेशर के अन्तर्गत प्वाईंटस् की जानकारी + योग के सरल आसन समझाये गये. इस अवसर पर हैदराबाद की योग संस्थाओं द्वारा मिलकर माता नैना को योग माता एवं योग शिरोमणि की उपाधि से अलंकृत किया गया.

सद्गुरु सर्वानन्द पुण्यतिथि

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य एवं उनके उत्तराधिकारी महर्षि सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का ४२वाँ वर्सी उत्सव २ अगस्त से ६ अगस्त २०१९ तक श्री अमरापुर दरबार सहित समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों मंदिरों में पूर्ण भक्तिभाव के साथ मनाया गया. इस अवसर पर सभी स्थानों पर पंचदिवसीय श्रीमद्भगवत्गीता एवं श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ रखे गये. विशेष सत्संग सभाओं में पूज्य संत महापुरुषों विद्वानों ने गुरु महाराजजी की महिमा का गुणानुवाद किया. अंतिम दिन पाठों के भोग, भण्डारे के कार्यक्रम आयोजित हुए.

सद्गुरु टेऊँराम भजनावली स्मरण प्रेमियोगिता

अहमदाबाद : **1. सुशीला मोहन वासवानी (प्रथम), 2. रानी भागचंदानी (द्वितीय), 3. वन्दना जगदीश कुमार (तृतीय)**, ४. शीला पोपटानी, ५. रश्मि कलवानी, ६. पिंकी कलवानी, ७. विमला लखवानी, ८. सुमन संगतानी, ९. आशा लखीसरानी, १०. मोहन वासवानी, ११. सीमा जीवनानी, १२. कल्पना खूबचंदानी, १३. राजेश एम. खूबचंदानी, १४. राजकुमारी कलवानी, १५. संतोष रमेश खूबचंदानी, १६. रेखा लख्यानी, १७. हिना दौलतानी, १८. कुसुम वनवानी, १९. पुष्पा चावला, २०. वैजयंती चन्द्रकुमार हेमलानी.

केदार नगर आगरा : १. शीला छाबड़ा, २. पूजा लालवानी, ३. दीपा विधलानी, ४. भारती देवानी, ५. खुशबू भागवानी. (कुल १३ प्रतिभागी). इस प्रकार कुल ३३ शहरों के ३८२ भक्तों ने भजन याद करके सुनाये.

गुरुपूर्णिमा महापर्व

जयपुर : हजारों हजार प्रेमियों ने मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की विशेष पूजा-अर्चना-आराधना हाजरांहजूर गुरुदेव सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के सानिध्य में करके असीम आनन्दानुभूति प्राप्त की. १६ जुलाई को गुरु पूर्णिमा के महान पर्व पर देश दुनिया से १ हजार से अधिक प्रेमी गुरु दरबार जयपुर में आये हुए थे. गुरुनगरी जयपुर के पच्चीसों हजार प्रेमी- सबके चेहरे गुरुआशीष स्वरूप ऐसे खिले हुए थे मानों गुलाब के फूल हों. प्रातः से दोपहर तक खूब मेला लगा रहा गुरुधाम अमरापुर में. यहाँ सदैव आनन्द ही आनन्द बरसता रहता है और विशेष दिनों की क्या बात की जाय- उसमें भी यह तो सनानत धर्मियों के लिए प्रमुखतम दिन होता है गुरु पूर्णिमा का तो आज के दिन तो वैकुंठसम आनन्द की वर्खा हो रही थी इस झमाझम आनन्दवर्खा में संगत भी खूब भीगी. बाहर से आये प्रेमप्रकाशियों को गुरुदेव भगवान के पावन कर कमलों से पखर-प्रसाद जब मिल रहा था तो उनके खिलते चेहरों पर आनन्दाश्रु छलक रहे थे.

इसी प्रकार देश दुनिया के समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों मंदिरों में गुरुपूर्णिमा के मंगल अवसर पर लगभग समस्त प्रेमियों (जो कभी कभी आने वाले हैं वे भी) ने एकत्रित होकर आचार्यश्री गुरुजनों की पूजा-आराधना-आरती आदि अनुष्ठान संतों के सानिध्य में किया. अनेक आश्रमों पर हवन, भण्डारे भी हुए. सभी जगह मेले लगे रहे.

सिंधवासियों को हुआ महाआनन्द

मंगलमूर्ति आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज गुरुजनों संतों एवं हमारे पूर्वजों की जन्मभूमि सिंध- जिसका नाम लेने मात्र से हृदय उल्लसित हो उठता है- में आज भी हजारों लोग सनातन हिंदू धर्म एवं प्रेम प्रकाश पंथ का झंडा थामे हुए हैं. सिंध प्रेम प्रकाश मंडल के प्रमुख श्री गोपीचन्द, डॉ. सुरेश कुमार तलरेजा, श्री कमल कुमार, श्री भूरामल इत्यादि के साथ कुल १२८ प्रेमी जिनमें बालक-बालिकाएं, युवा व बड़ी आयु के स्त्री-पुरुष शामिल थे- इन्दौर से चलकर २२ जुलाई को प्रातः ६ बजे बसों द्वारा पावन तीर्थधाम श्री अमरापुर दरबार पहुँचे तो उनका रोम-रोम पुलकित हो उठा. यहाँ मुख्यद्वार पर उनकी अगवानी संत नंदलाल जी के साथ सैकड़ों प्रेमियों ने हर्षोल्लास से की. गुरुधाम पहुँचकर सिंधवासियों की आँखें छलछला उठीं. आचार्यश्री गुरुजनों के दिव्य दर्शन करके जब हाजरांहजूर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के दर्शन संगत ने किये तो खुशी के आँसुओं से आँखें सजल हो गईं. गुरुदेव के समक्ष खूब नाच-गाकर अपनी खुशियाँ व्यक्त की सिंधवासियों ने.

जयपुर के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित प्रेम प्रकाश मंदिरों, झूलेलाल मंदिर, माता लीलावंती सत्संग भवन के अलावा मनवानी परिवार, वाधवानी परिवार, जेठानी परिवार, वीधाणी परिवार, आसनानी परिवार, चौमू में राजेश कुमार परिवार द्वारा सिंध से आये जत्थे के स्वागत- सत्कार में सद्गुरु महाराज जी संत मण्डल की सानिध्यता में भव्यता पूर्वक अनेक कार्यक्रम रखे गये. २८ जुलाई को 'दयावान सांई टेऊँराम' नाटक का मंचन भी रंगमंच के कलाकारों द्वारा स्वागत स्थल पर किया गया.

इसके पूर्व गुरुधाम एवं सद्गुरु महाराज जी के दर्शनों के लिए लालायित अनेक बाधाओं को पार करते हुए सौभाग्यशाली सिंधवासी १० जुलाई को वाघा बार्डर पार करके अमृतसर पहुँचे. प्राप्त वीजा अनुमति अनुसार वहाँ से रेलगाड़ी द्वारा इन्दौर के लिए रवाना हुए. दिल्ली में पूज्य स्वामी जयदेवजी महाराज, संत विनेशलाल जी ने प्रेमियों सहित, ग्वालियर में संत हरिओमलाल जी, संत प्रतापलाल जी ने संगत के साथ, गुना में प्रेमप्रकाशी श्री केशवदास ने पूज्य पंचों के साथ मिलकर सिंधवासियों का रेल्वे स्टेशन पर स्वागत-सत्कार किया. इन्दौर १२ जुलाई भोरकाल में ४ बजे पहुँचे. उत्साहित प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली के एक सैकड़ा से अधिक सेवकों ने सिंध से आये जत्थे की अगवानी की. इन्दौर आश्रम पर संत लालूराम जी, संत सुंदरदास जी ने जत्थे का स्वागत किया. इन्दौर में भी विभिन्न स्थानों पर आनन्द हुआ. यहाँ पर पूज्य स्वामी जयदेव जी महाराज, संत विनेशलाल भी पहुँचे. संतों के सानिध्य में सिंधवासियों का आनन्द ही आनन्द हो गया. वीजा की औपचारिकता पूर्ण होने पर २१ जुलाई को सायंकाल जयपुर के लिए रवाना हुए.

आचार्यश्री गुरुजनों, हाजरांहजूर गुरुदेव भगवान से कृतार्थ होते हुए, हृदय में अविस्मरणीय स्मृतियों को समेटकर ३१ जुलाई प्रातः ६:३० बजे अमृतसर वाघा बार्डर के लिए जत्थे की रवानगी हुई. जयपुर के प्रेमियों द्वारा उनको विदाई दी गई. मार्ग में सीकर की प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली द्वारा संत महेशलाल जी के सानिध्य में जत्थे का आत्मीयता पूर्वक भव्य स्वागत किया गया.

अमरापुर गमन
शोक-समाचार

श्री हरीश कुमार रामचंदानी जी

अहमदाबाद। सद्गुरु महाराज जी के प्यारे प्रेमी दादा श्री दौलतराम-उत्तमबाई के सुपुत्र श्री हरीश कुमार रामचंदानी जी, ५१ वर्ष की आयु में २६ जून को गुरुगोद में अमरापुर सिधारे. आप गुरु दरबार के प्रमुख सेवकों में से थे. दरबार की महत्वपूर्ण सेवाओं को आप पूर्ण निष्ठा भाव से करते रहे. आपकी गुरुदेव, संतों गुरु दरबार के प्रति सेवा भक्ति अनुकरणीय है.

श्री सुदामामल गंगवानी जी

गोन्दिया। गुरु दरबार की ध्वनि विस्तारक (साउण्ड) सेवा को पिछले अनेक वर्षों से नित्य नियम से करने वाले दादा श्री सुदामामल गंगवानी जी ५ जुलाई को गुरु चरणाश्रय में अमरापुर सिधारे.

माता इंजनादेवी जी

भाटापारा। पिछले १८ वर्षों से प्रेम प्रकाश आश्रम, भाटापारा की सेवा संभाल करने वाली माता इंजनादेवी शादीजा धर्मपत्नि अमरापुरवासी श्री अर्जुनदास शादीजा, ७६ वर्ष की आयु में १६ जुलाई गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व मनाने के बाद गुरुलोक अमरापुर सिधारीं. जीवनोत्सर्ग तक आपका गुरु दरबार, गुरुदेव संतों के प्रति सेवा निष्ठा का अनन्य भाव सराहनीय रहा.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्यश्री सद्गुरु देव स्वामी टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से प्रार्थना की गई (पल्लव पाया).

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-183

1	2	3		4	5	ॐ	6
7			ॐ	8			
	ॐ	9		ॐ		ॐ	
ॐ	10	ॐ	ॐ	11			
12		13	14		ॐ	ॐ	
ॐ	ॐ	15			16		ॐ
17	18			ॐ		ॐ	19
20			ॐ	21			

प्रस्तुति : सुधा जौहरी, जयपुर

बाएँ से दाएँ :

01. युधिष्ठिर का शँख. (3.3)
07. इन्द्र का उपवन; महादेव; बेटा; केसर; आनन्ददायक. (3)
08. मृत्य के देवता. (4), 09. वंश जिसमें कृष्ण जन्मे. (2)
11. पुष्प रस; फूलों की केसर. (4)
12. सारे तीरथ बार बार ..... एक बार; तीर्थ जहाँ स्टीमर से जाते हैं. (2.3)
15. जल के देवता. (3.2), 17. हिंसात्मक झगड़े जिनमें दूसरे पक्ष को मारते हैं. (4)
20. शीश झुकाकर अभिवादन; प्रणाम. (3)
21. देवता अथवा दिव्य या गुरु लोगों से मिली विशेष शक्ति. (4)

ऊपर से नीचे :

01. कामदेव; देहरहित. (3)
02. यशोदा के पति; श्रीकृष्ण के पालक पिता. (2), 03. पुत्र; शरीर से उत्पन्न. (3)
04. जीत; जन गण मन अधिनायक ..... हे. (2)
05. लोक जिसमें मृत्यु के पश्चात् आत्माएँ जाती हैं. (2.2)
06. गणपति जिनका हाथी का शीश है. (5), 10. सुरसरि; भागीरथी. (2)
11. मृत्यु; हानि लाभ जीवन ..... यश अपयश विधि हाथ. (3)
13. सतर्क; सचेत जैसे बनवास में रात्रि समय लक्ष्मण रहते थे. (4)
14. विष्णु भगवान का वाहन; पक्षिराज. (3), 16. लक्ष्मण सीता के ..... थे. (3)
17. आदर; 'जग में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान, कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता .... (2)
18. साक्षी चेतन .... रहा, जल थल पुनि आकाश'; व्याप्त होना. (2)
19. सतगुरु बुद्धि के नैन में डारे अंजन.....; बोध; भिज्ञ; जानकारी .(2)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-182 का सही हल

1 के	2 दा	र	3 ना	4 थ	ॐ	5 श	6 चि
7 ला	वा	ॐ	8 न	ल	9 कू	ब	र
ॐ	10 न	11 र	क	ॐ	12 प	री	ॐ
13 ज	ल	ज	ॐ	14 रा	म	ॐ	15 स
टा	ॐ	नी	ॐ	16 ख	ण्डू	ॐ	वि
17 यु	18 ग	ॐ	19 दा	ॐ	20 क	21 वि	ता
ॐ	22 र	23 ज	नी	24 श	ॐ	का	ॐ
25 म	ल	य	ॐ	26 नि	वा	र	ण

वर्गपहेली-182 के सही हल भेजने वालों के नाम- जयपुर से प्रेमप्रकाशी जतिन, सोनिया, सारिका, कविता, अशोक पुरसानी, मुम्बई से प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार मोटवानी, विजयवाड़ा से प्रेमप्रकाशी गुलाबराय लालवानी, गांधीधाम से प्रेमप्रकाशी रमेश ताराचंद बूलचंदानी, कान्ता सुरेश लालवानी, मयंक सुरेश चतुरानी, जयंती मोहनदास भगतानी, पलवल से प्रेमप्रकाशी अशोक कुमार सरदाना, नितिन अरोड़ा, वाराणसी से प्रेमप्रकाशी लीना भगवानदास जाजानी, गोन्दिया से प्रेमप्रकाशी प्रीती विजय पृथ्यानी, भानुप्रतापपुर से प्रेमप्रकाशी मायादेवी, कोरबा से प्रेमप्रकाशी राजकुमार गंगवानी, राजकोट से प्रेमप्रकाशी डॉ. जीवतराम मूलचंदानी, जोधपुर से प्रेमप्रकाशी भावना मनोहरलाल बादलानी, गीता परी धर्मानी, रेणु ममता खिमानी, दीपा कटारिया, माधुरी कृपलानी, कविता कलवानी, राधा सोनिया सखरानी, दल्ली राजहरा से प्रेमप्रकाशी गुरुमुखदास शहानी, सिमरन रविशंकर तलरेजा, इन्दौर से प्रेमप्रकाशी प्रीती तलरेजा, कविता लोहानी, सानवी तलरेजा, मंदसौर से प्रेमप्रकाशी मंजू लक्ष्मणदास होतवानी, माया विजानी, कोरबा से प्रेमप्रकाशी लक्की सचदेव, अहमदाबाद से प्रेमप्रकाशी यशवन्त, रश्मि कलवानी, दिल्ली से प्रेमप्रकाशी रमा राकेश गंग्लानी, संध्या माखीजा.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम

17 जुलाई से 20 सित. 2019 तक	**अनिर्णीत**	✆ 098290–14850
21 सित. से 23 सित. 2019 तक	**जयपुर**	✆ 0141–2372424, 2372423
24 सित. से 26 सित. 2019 तक	**ब्यावर** (वार्षिकोत्सव)	✆ 093351–14850
27 सित. से 28 सित. 2019 तक	**नसीराबाद, केकड़ी**	✆ 093351–14850
29 सित. से 30 सित. 2019 तक	**जयपुर**	✆ 0141–2372424, 2372423
01 से 14 अक्टूबर 2019 तक	**विदेश यात्रा**	✆ 098290–14850
15 से 16 अक्टूबर 2019 तक	**हिसार** (वार्षिकोत्सव)	✆ 01662–272049
17 से 20 अक्टूबर 2019 तक	**पलवल** (वार्षिकोत्सव)	✆ 01275–252826
21 से 22 अक्टूबर 2019 तक	**हथीन** (वार्षिकोत्सव)	✆ 099717–77638, 94166–36529
23 से 24 अक्टूबर 2019 तक	**पिनगवाँ** (वार्षिकोत्सव)	✆ 099910–91078
25 से 28 अक्टूबर 2019 तक	**जयपुर** (दीपावली)	✆ 0141–2372424, 2372423
29 अक्टूबर 2019	**यात्रा**	✆ 098290–14850
30 अक्टूबर से 1 नव. 2019 तक	**पूना** (वार्षिकोत्सव–कार्तिकोत्सव)	✆ 080555–27272
02 से 3 नवम्बर 2019 तक	**पिम्परी** (वार्षिकोत्सव–कार्तिकोत्सव)	✆ 020–27410487
04 से 6 नवम्बर 2019 तक	**जयपुर** (कार्तिकोत्सव–गोपाष्टमी)	✆ 0141–2372424, 2372423
07 से 8 नवम्बर 2019 तक	**सीकर** (कार्तिकोत्सव–वार्षिकोत्सव)	✆ 094142–88017
09 से 12 नवम्बर 2019 तक	**कोटा** (कार्तिकोत्सव–वार्षिकोत्सव)	✆ 094141–77781
13 नवम्बर 2019	**भवानीमण्डी** (वार्षिकोत्सव)	✆ 094141–77781
14 से 15 नवम्बर 2019 तक	**मंदसौर** (वार्षिकोत्सव)	✆ 094253–27651
16 से 17 नवम्बर 2019 तक	**भीलवाड़ा**	✆ 098292–84799
18 से 20 नवम्बर 2019 तक	**जयपुर**	✆ 0141–2372424, 2372423
21 से 25 नवम्बर 2019 तक	**दिल्ली** (स्वामी जयप्रकाश वार्षिकोत्सव)	✆ 098101–90467, 85279–21530
26 से 27 नवम्बर 2019 तक	**गया**	✆ 098290–14850
28 से 29 नवम्बर 2019 तक	**काशी वाराणसी** (वार्षिकोत्सव)	✆ 0542–2090412
30 नवम्बर 2019	**प्रयागराज**	✆ 070812–19000, 94528–92996
01 दिसम्बर से 2 दिस. 2019 तक	**फैजाबाद अयोध्या** (वार्षिकोत्सव)	✆ 091700–20295, 81032–31333
03 से 4 दिसम्बर 2019 तक	**लखनऊ** (वार्षिकोत्सव)	✆ 070812–19000, 94500–26893
05 से 7 दिसम्बर 2019 तक	**कानपुर** (वार्षिकोत्सव)	✆ 070812–19000

व्रत-पर्व-उत्सव

श्रावण शुक्ल पक्ष

15 अगस्त 2019-गुरुवार- स्वतंत्रता दिवस, रक्षाबंधन, श्रावणी नारियल पूर्णिमा, सद्गुरु शान्तिप्रकाश अवतरण दिवस समस्त आश्रमों पर, पंचकारम्भ रात्रि में 9:13 बजे से

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

17 अगस्त 2019-शनिवार-सिंह संक्रान्ति, सद्गुरु शान्तिप्रकाश निर्वाणतिथि दिवस समस्त आश्रमों पर

18 अगस्त 2019–रविवार–कज्जली तीज, टीजड़ी व्रत

19 अगस्त 2019–सोमवार–श्रीगणेशचतुर्थीव्रत चंद्रोदय 8:57 रात

20 अगस्त 2019–मंगलवार–पंचक समाप्त रात्रि में 8:19 बजे

22 अगस्त 2019–गुरुवार–वड़ी थधड़ी–सतइं (शीतला सप्तमी)

23 अगस्त 2019-शुक्रवार-श्रीकृष्ण जन्माष्टमी गोकुलाष्टमी (स्मार्त), सद्गुरु हरिदासराम वर्सी उत्सव सभी आश्रमों पर शुरू

24 अगस्त 2019–शनिवार–जन्माष्टमी वैष्णव (अमरापुर स्थान + गोविन्ददेव जी मंदिर जयपुर में)

24-25 अगस्त-शनि-रवि-झूलेलाल चालीहा समापन

26 अगस्त 2019–सोमवार–जया (अजा) एकादशी व्रत

27 अगस्त 2019-मंगलवार-सद्गुरु हरिदासराम निर्वाणतिथि दिवस, समस्त आश्रमों पर वर्सी उत्सव के प्रमुख कार्यक्रम, अन्न मटयो

28 अगस्त 2019–बुधवार–प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी

30 अगस्त 2019–शुक्रवार–कुशोत्पाटनी अमावस्या

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

31 अगस्त 2019–शनिवार–चन्द्रदर्शन

02 सितम्बर 2019–सोमवार–वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, श्री गणेश जयंती, श्री गणेशोत्सव शुरू, चन्द्रदर्शन निषिद्ध

04 सितम्बर 2019-बुधवार-सद्गुरु टेऊँराम चौथ

06 सितम्बर 2019–शुक्रवार–श्रीराधाष्टमी, सग़ड़ा बुधण

09 सितम्बर 2019–सोमवार–जलझूलनी/ पद्मा एकादशी

11 सितम्बर 2019–बुधवार–प्रदोष व्रत, पंचकारम्भ रात्रिशेष 4:26

12 सितम्बर 2019–गुरुवार–अनंत चतुर्दशी, श्री गणेश विसर्जन

13 सितम्बर 2019–शुक्रवार–व्रत की पूर्णिमा

14 सितम्बर 2019–शनिवार–स्नान दान पूर्णिमा, श्राद्ध पक्ष शुरू

आश्विन कृष्ण पक्ष

16 सितम्बर 2019–सोमवार–पंचक समाप्त रात्रि में 3:33 बजे

17 सितम्बर 2019–मंगलवार–श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रि में 8:05 पर, कन्या संक्रांति

22 सितम्बर 2019–रविवार–महालक्ष्मी, सग़ड़ा छोड़ण

24 सितम्बर 2019–मंगलवार–एकादशी श्राद्ध

25 सितम्बर 2019–बुधवार–इंदिरा एकादशी व्रत

26 सितम्बर 2019–गुरुवार–प्रदोष व्रत

28 सितम्बर 2019–शनिवार–सर्वपितृ विसर्जन अमावस्या

आश्विन शुक्ल पक्ष

29 सितम्बर 2019–रविवार–नवरात्रा प्रारम्भ, घट स्थापना

30 सितम्बर 2019–सोमवार–चन्द्रदर्शन, असू चण्ड

हरिद्वार मेला इस साल नहीं होगा

महर्षि गुरुवर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का जन्मोत्सव मेला जो हरिद्वार में लगभग हर वर्ष आयोजित होता है- इस वर्ष नहीं होगा- इसके स्थान पर सद्गुरु महाराज जी का जन्मोत्सव समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में 8 से 12 अक्टूबर 2019 तक स्थानीय स्तर पर मनाया जायेगा.

सन् 2021 में हरिद्वार में कुम्भ मेले का आयोजन होना है एवं इस अवसर पर चैत्र मेले का शताब्दी पर्व भी मनाया जाना है. इसको देखते हुए वर्षा काल के पश्चात् भोपतवाला स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में कुछ आवश्यक मरम्मत कार्य किये जायेंगे.

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं जुलाई २०१६ अंक खां अगिते- ।। दशपदी-12 ।।

मात पिता सुत मित्र लुगाई, पुनि पुनि मिलहैं भैनें भाई।
रवि शशि धरनी पावक पानी, पुनि पुनि ये भी मिलहैं प्रानी।
माणिक मोती धन सुख सम्पति, पुनि पुनि ये भी होय प्रापति।
परन्तु अवसर जो यह जावे, यतन किये फिर हाथ न आवे।
ताँते अबहीं चेत सुजाना, कह टेऊँ जपले भगवाना।। 5 ।।

समय ऐं अवसर जो महत्वु बुधाईंदे सत्गुरु स्वामी टेऊँराम साहिब जनि चवनि था, 'समय ऐं सुअवसरु हिकु भेरो हली वियो त उहो वापस कोन मिली सघंदो आहे. माता, पिता, पुटु, मित्र ऐं पत्नी तथा भेण ऐं भाउ वरी वरी मिली सघनि था; प्राणीअ खे सिजु, चंडु, धरती, अग्नी ऐं पाणी बि बीहर, वरी वरी मिली सघनि था; हीरा, मोती, धनु, सुखु, संपत्ती बि वरी वरी प्रापति थी सघंदी आहे पर अवसरु/मौक़ो (मनुष-जनमु मिलण जो) हिक दफ़ो हलियो वियो त अनेक जतन करण खां पोइ बि कोन मिली सघंदो. तंहिंकरे हे मनुष ! हे सुजान सियाणा मनुष ! तू जागु, होश में अचु ऐं भगवान जो सुमिरनु करि !'

चवंदा आहिनि त 'डुधो खीरु वापस थणनि में कोन पवंदो आहे, अहिड़ीअ तरह हली वियलु वक़्तु वापस कोन ईंदो आहे. बालपणि/बचपन गुज़िरी वञण खां पोइ वापस कोन मिलंदो आहे. नदीअ जो प्रवाहु पुठियां कोन वरंदो आहे. को सुठो अवसरु मिले थो त उन जो फ़ाइदो वठणु घुरिजे. न त उहो अजायो वेंदो ऐं वरी वापस कोन मिलंदो. मनुष जो जनमु मिलणु बि हिकु उत्तमु अवसरु आहे, जेको भागुनि सां मिले थो ऐं जेको बार-बार कोन मिलंदो आहे. तंहिंकरे इन जनम खे सफलो बणाइणु घुरिजे. जनमु सक्यार्थो करण लाइ ज़रूरी आहे सुठी, नेकु हलति हलणु, परोपकारी वृत्ती धारणु ऐं भगवान जो नालो जपणु, भजनु-सुमिरनु करणु- सुठी गाल्हि करण सां मन खे संतोषु मिले थे. मनुष जो मस्तिष्कु दिमागु पिणु शांतीअ जो अनुभवु करे थो. काम, क्रोध, अहंकार आदी विकारनि खां परे रही ईश्वरु-चिंतनु करणु मनुष खे मिलंदड़ समय जो सदुपयोग करणु ई आहे. सुठे मार्ग ते हलणु समय/अवसर जो सुठो उपयोगु करणु आहे.'

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : श्रीचन्द पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, कार्यालय : प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474 001 18 से प्रकाशित किया गया।
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 व सांय 4 से 7 बजे तक)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी प्रबन्ध सम्पादक : श्रीचन्द पंजवानी

RNI MPHIN/2008/25627
डाक रजि. ग्वालियर सम्भाग- 161/2017-19
(R.M.S. Posting date Every Month 15th)

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए. – व्यवस्थापक

टीवी चैनलों पर
सद्गुरु महाराज जी के दिव्य सत्संग-दर्शन का लाभ लें

प्रति रविवार
ईश्वर टीवी चैनल
सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक

संस्कार टीवी चैनल
अब बदले समय पर सायं 7 से 7:20 तक